खबरों एवं
विज्ञापन हेतु
संपर्क करें
9457222201

हिंदी दैनिक समाचार पत्र

राष्ट्र जगत

राष्ट्र की बुलंद आवाज

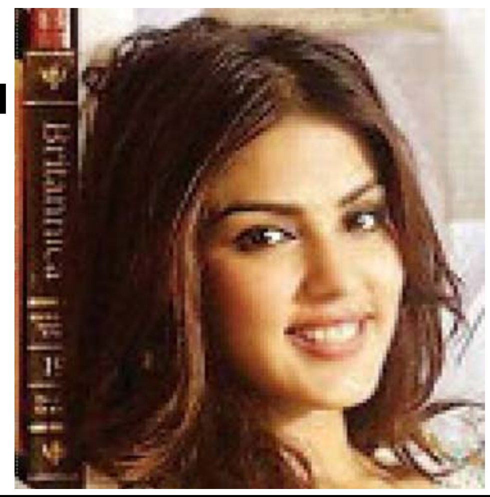

संपादक : सौरभ शर्मा

बरेली उत्तर प्रदेश से प्रकाशित एवं लखनऊ , दिल्ली , उत्तराखंड , महाराष्ट्र में प्रसारित

वर्ष : 03 अंक :194 पृष्ठ : 08 मूल्य :2 रू

शनिवार, 29 अगस्त 2026

RNI NO. : UPHIN/2024/90933

नेपाल में मंडरा रहा है नया खतरा, तिब्बत में झील फटी

472 लोगों की मौत, 1500 अभी भी लापता, 290 भारतीयों की तलाश जारी

काठमांडू। नेपाल-तिब्बत सीमा के पास बनी एक और झील फट गई है। यह झील चोचेन नदी और पुरेपु सांगपो नदी के संगम के पास बनी थी। चीन ने इसके फटने की आशंका एक दिन पहले ही जताई थी।

झील फटने के बाद पानी का स्तर बढ़ने लगा है। खतरे की वजह से के रसुवा जिले में रेस्क्यू ऑपरेशन 90 मिनट के लिए रोक दिया गया है। नदी के रास्ते में आने वाले गांव खाली कराए जा रहे हैं। लोगों और सुरक्षाकर्मियों को तुरंत सुरक्षित जगहों पर जाने को कहा है।

इस बीच चीन ने भी तिब्बत में राहत और बचाव अभियान रोक दिया है और लेवल-4 अलर्ट जारी किया है। दोबारा बाढ़ आने के खतरे को देखते हुए यह कदम उठाया गया है।

बाढ़ और भूस्खलन से दोनों देशों में अब तक 478 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 1,500 से ज्यादा लोग लापता हैं। इनमें करीब 290 भारतीय भी शामिल हैं। इस बीच नेपाल सरकार ने भारत, चीन, अमेरिका, ब्रिटेन समेत कई देशों की ओर से भेजी गई विदेशी रेस्क्यू टीमों की पेशकश ठुकरा दी है। सरकार का कहना है कि नेपाल की सेना और पुलिस खुद राहत-बचाव अभियान संभालने में सक्षम हैं।

नेपाल के अधिकारियों के मुताबिक, 2015 के भूकंप के दौरान बड़ी संख्या में विदेशी रेस्क्यू टीमों के आने से बचाव अभियान के तालमेल में दिक्कतें आई थीं। इसी को देखते हुए इस बार विदेशी टीमों की जगह आर्थिक मदद लेने का

फैसला किया गया है।

तिब्बत की तरफ पानी का बहाव फिर से बढ़ने/फैलने की जानकारी मिली है। इसलिए राहत और बचाव के काम में लगे सभी सुरक्षाकर्मियों, बचावकर्मियों और आम लोगों से तुरंत सतर्क रहने और सुरक्षित जगह पर जाने की अपील की गई है। लोगों से यह भी कहा गया है कि आसपास के लोगों को भी इस खतरे की जानकारी दें और सुरक्षित स्थान पर पहुंचने में मदद करें।

चीन ने ग्यिरोंग पोर्ट से 1 हजार से ज्यादा लोगों को सुरक्षित निकाला

चीन के अधिकारियों के मुताबिक, तिब्बत-नेपाल सीमा के पास ग्यिरोंग काउंटी से 1,000 से ज्यादा लोगों को सुरक्षित निकाल लिया गया है। इनमें 555 पर्यटक शामिल हैं।

चीनी सरकारी न्यूज एजेंसी शिन्हुआ के मुताबिक, ग्यिरोंग में 499 स्थानीय लोगों और निर्माण श्रमिकों के साथ 555 प्रभावित पर्यटकों को सुरक्षित जगह पहुंचाया गया।

चीन के सरकारी अखबार ग्लोबल टाइम्स के मुताबिक, अब इलाके में कोई भी पर्यटक फंसा नहीं है। बुधवार को आई बाढ़ में तिब्बत में 3 और नेपाल में 469 लोगों की मौत की पुष्टि हुई है, जबकि बड़ी संख्या में लोग अब भी लापता हैं।

चीन ने झील के सर्वे के लिए इंजीनियर्स की टीम भेजी

चीन ने नेपाल सीमा के पास तिब्बत में बनी एक अस्थायी झील का सर्वे शुरू कर दिया है। आशंका है कि झील के टूटने से बाढ़ का नया खतरा पैदा हो सकता है। इसी को देखते हुए इंजीनियरों की टीम हवाई सर्वे और 3ष्ठ मॉडलिंग के जरिए हालात का आकलन कर रही है।

नेपाल में आई बाढ़ के बाद गंडक नदी का जलस्तर बढ़ गया है। इससे बिहार के पुचहरिया गांव के बाबू टोला में बाढ़ और कटाव का खतरा बढ़ गया है। एक स्थानीय निवासी ने बताया, 'पानी का स्तर लगातार बढ़ रहा है। प्रशासन ने लोगों से ऊंची जगहों पर जाने को कहा है, लेकिन लोग अभी भी गांव में ही हैं।' चीन-नेपाल सीमा पर स्थित ग्यिरोंग काउंटी में अगले तीन दिनों तक बारिश होने का अनुमान है। यह इलाका हालिया भूस्खलन से बुरी तरह प्रभावित हुआ है। अधिकारियों ने आगे भी भूस्खलन और बाढ़ का खतरा जताया है।

चीनी सरकारी मीडिया CCTV ने चीन मौसम विज्ञान विभाग के हवाले से बताया कि ग्यिरोंग में अगले तीन दिनों के दौरान रुक-रुककर बारिश होगी।

तिब्बत में ग्लेशियर का 1.2 किमी हिस्सा टूटा था

बुधवार सुबह नेपाल-तिब्बत सीमा के पास ग्लेशियर का एक बड़ा हिस्सा टूट गया। इसके साथ बर्फ, चट्टान और मिट्टी का मलबा पहाड़ से नीचे की ओर आया और करीब 1.2 किलोमीटर तक फैल गया। मलबे के नदी में पहुंचते ही भोटेकोशी में पानी का स्तर तेजी से बढ़ा और नेपाल के कई इलाकों में बाढ़ आ गई।

नेपाल की त्रिशूली नदी में आधे घंटे के भीतर पानी का स्तर 9 मीटर तक बढ़ गया। पानी और मलबे का यह तेज बहाव करीब 170 किलोमीटर तक पहुंचा और सात नेपाली जिलों को प्रभावित किया।

बाढ़ का असर सीमा पार तिब्बत के ग्यिरोंग इलाके में भी दिखा। चीन के सरकारी चैनल ष्टष्टञ्जङ्क के मुताबिक, कुछ जगहों पर सड़कें 2 मीटर से ज्यादा मिट्टी के नीचे दब गईं।

चीन ने जारी किया लेवल-4 अलर्ट

तिब्बत-नेपाल सीमा पर विनाशकारी अचानक आई बाढ़ के बाद चीन ने लेवल-4 अलर्ट जारी किया है। चीन ने चेतावनी दी है कि दो नदियों के संगम पर बनी नई बैरियर झील के टूटने का खतरा काफी ज्यादा है। अगर झील टूटी तो नीचे की ओर के इलाकों में फिर बाढ़ आ सकती है।

चीन में बाढ़ से जुड़ी आपात स्थिति के स्तर आम तौर पर इस तरह होते हैं:

लेवल-1: सबसे गंभीर आपात स्थिति

लेवल-2: बड़ी आपात स्थिति

लेवल-3: गंभीर आपात स्थिति

लेवल-4: सबसे निचला आपात स्थिति स्तर

हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट की सुरंग में रेस्क्यू ऑपरेशन तेज

बाढ़ के बाद रसुवा हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट की सुरंग में फंसे लोगों को निकालने के लिए नेपाली सेना ने सर्च और रेस्क्यू ऑपरेशन तेज कर दिया है।

मुश्किल पहाड़ी इलाके और खतरनाक हालात के बावजूद सेना के जवानों ने अब तक सुरंग से दो लोगों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया है। हालांकि, सुरंग में अभी कितने लोग फंसे हुए हैं, इसकी सही संख्या स्पष्ट नहीं है। फंसे लोगों का पता लगाने और उन्हें बाहर निकालने के लिए तलाशी अभियान लगातार जारी है।

बिहार के 20 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट : 50 हजार से ज्यादा घर डूबे

नई दिल्ली। बिहार के खगड़िया और चंपारण समेत 20 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग के मुताबिक, 1 सितंबर तक बारिश का दौर जारी रह सकता है।

वहीं, नेपाल में आई बाढ़ से बिहार के 8 जिलों में हाई अलर्ट है। गंगा और गंडक खतरे के निशान से ऊपर हैं। कोसी और बागमती नदियां भी उफान पर हैं। यहां 50 हजार से ज्यादा घर पानी में डूबे हैं। उत्तराखंड के 11 जिलों में बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। वहीं, गुरुवार को चमोली में लैंडस्लाइड से बद्रीनाथ हाईवे कुछ देर के लिए बाधित हुआ। हिमाचल प्रदेश में एक बार फिर भारी बारिश का दौर शुरू होने की संभावना है। मौसम विभाग ने 31 अगस्त से 2 सितंबर तक अलग-अलग स्थानों पर भारी बारिश का यलो अलर्ट जारी किया है।

लैंडस्लाइड्स और भारी बारिश के चलते राज्य में 70 सड़कें बंद हैं।

ओडिशा: ढ्ढरूष्ठ ने 21 जिलों के लिए अलर्ट जारी किया

भारत मौसम विज्ञान विभाग (ढ्ढरूष्ठ) ने ओडिशा के 19 जिलों के लिए येलो अलर्ट जारी किया है, जिसमें 28 अगस्त को कई स्थानों पर गरज और बिजली के साथ भारी बारिश का पूर्वानुमान है। क्योंझर और मयूरभंज को भारी से बहुत भारी बारिश के लिए ऑरेंज अलर्ट पर रखा गया है।

यह चेतावनी तब आई है जब उत्तर-पश्चिम बंगाल की खाड़ी के ऊपर एक चक्रवाती परिसंचरण सक्रिय है। इसके प्रभाव में, 29 अगस्त को पश्चिम बंगाल-उत्तर ओडिशा तट के साथ एक नया कम दबाव का क्षेत्र बनने की संभावना है, जिससे पूरे राज्य में और अधिक बारिश होगी।

उत्तराखंड के 11 जिलों में बारिश की संभावना

उत्तराखंड के 11 पहाड़ी जिलों में कई स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश और गरज के साथ बौछारें पड़ने की संभावना है। वहीं, हरिद्वार और ऊधम सिंह नगर जिलों में भी कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश होने के साथ गरज और बौछारें पड़ सकती हैं।

आज खुलेगा पहला स्काईवॉक ट्रैवलेटर आ जा सकेंगे

नोएडा। लंबे इंतजार के बाद नोएडा का पहला स्काईवॉक रक्षाबंधन पर यात्रियों के लिए खोल दिया जाएगा। इसका निर्माण कार्य पूरा हो चुका है और इसे जनता को समर्पित किया जाएगा। स्काईवॉक सेक्टर-52 ब्लू लाइन और सेक्टर-51 एक्वा लाइन मेट्रो स्टेशन को आपस में जोड़ेगा। इससे यात्रियों को दोनों स्टेशनों के बीच जाने के लिए सड़क पर नहीं उतरना पड़ेगा। करीब 33 करोड़ रुपए की लागत से बने इस स्काईवॉक से रोजाना दोनों मेट्रो स्टेशनों के बीच आने-जाने वाले हजारों यात्रियों को राहत मिलेगी। नोएडा प्राधिकरण के जीएम एसपी सिंह ने बताया कि स्काईवॉक को बिना औपचारिक उद्घाटन के संचालित करने का आदेश दिया गया है, ताकि यात्रियों को सुविधा का लाभ जल्द मिल सके। परियोजना का काम वर्ष 2023 में शुरू हुआ था। अभी नीचे से गुजरते हैं यात्री

फिलहाल सेक्टर-51 और सेक्टर-52 मेट्रो स्टेशनों के बीच इंटरचेंज करने वाले यात्रियों को स्टेशन के नीचे बने पैदल मार्ग से गुजरना पड़ता है। यहां अक्सर भीड़ रहती है और यात्रियों को सड़क के आसपास से होकर जाना पड़ता है।

निर्माण के दौरान स्काईवॉक के डिजाइन में कुछ तकनीकी बदलाव भी किए गए। इसे मेट्रो स्टेशन की लिफ्ट के सामने से जोड़ा गया है। इसके चलते स्काईवॉक की लंबाई पहले के प्रस्ताव से बढ़ गई। स्काईवॉक करीब छह मीटर चौड़ा है। इसमें यात्रियों की सुविधा के लिए बेहतर लाइटिंग और मजबूत रेलिंग लगाई गई हैं। दिव्यांग यात्रियों के लिए भी सुगम आवाजाही की व्यवस्था की गई है। स्काईवॉक में ट्रैवलेटर लगाया गया है। इससे बुजुर्गों, दिव्यांगों और सामान लेकर चलने वाले यात्रियों को दोनों मेट्रो स्टेशनों के बीच आने-जाने में आसानी होगी।

बच्चियों ने योगी को राखी बांधी

लखनऊ। रक्षाबंधन पर बच्चियों ने सीएम योगी आदित्यनाथ को राखी बांधी। उनका ऑटोग्राफ लिया। राखी बंधवाने के बाद योगी ने सभी बच्चियों को चॉकलेट, शगुन के लिफाफे और तोहफे में एक-एक बैग दिया। इस दौरान उन्होंने बच्चों से बातचीत भी की।

सीएम आवास आई संस्कृति स्कूल की छात्रा श्रेयसी सिंह ने पूछा कि सोशल मीडिया के इस दौर में खुद को फोकस्ड कैसे रखें? इस पर योगी ने जवाब दिया मेरे जैसा व्यक्ति मोबाइल का इस्तेमाल कम से कम करता है। बहुत जरूरी हुआ तो बमुश्किल आधा घंटा ही मोबाइल देखता हूं। मैं प्रदेश के सभी बच्चों से कहूंगा कि मोबाइल फोन पर अनावश्यक समय बर्बाद करने के बजाय किताबें पढ़ना शुरू करें। इधर, रक्षाबंधन पर लखनऊ, मथुरा और अयोध्या समेत प्रदेश भर की जेलों के बाहर बहनों की लंबी कतारें देखने को मिलीं। महिलाएं जेल में बंद अपने भाइयों को राखी

बांधने पहुंचीं। लखनऊ जेल प्रशासन की ओर से बहनों के लिए कोल्ड ड्रिंक की व्यवस्था की गई।

उधर, बाजारों में मिठाई और राखी की दुकानों पर खरीदारों की भारी भीड़ उमड़ी हुई है। बसों और ट्रेनों में जबर्दस्त भीड़ के चलते यात्रियों को अंदर दाखिल होने के लिए कड़ी मशक्कत करनी पड़ रही है। हालत यह है कि लोग खिड़कियों के रास्ते बच्चों को अंदर बैठा रहे हैं। कई लोग खड़े-खड़े सफर करने को मजबूर हैं।

वहीं, सावन के आखिरी दिन काशी में बाबा विश्वनाथ को मंगला आरती के बाद रक्षासूत्र (राखी) धारण कराया गया। शाम को बाबा विश्वनाथ सपरिवार झूले पर विराजमान होकर श्रद्धालुओं को दर्शन देंगे।

सऊदी अरब में भारी बारिश का अलर्ट

मक्का और ताइफ समेत कई इलाकों में बाढ़ का खतरा

रियाद। सऊदी अरब में मौसम विभाग ने भारी बारिश, गरज-चमक और अचानक आने वाली बाढ़ को लेकर चेतावनी जारी की है। मक्का, ताइफ और देश के कई अन्य क्षेत्रों में मौसम संबंधी अलर्ट सक्रिय किए गए हैं। अधिकारियों ने नागरिकों और यात्रियों से सतर्क रहने तथा जलभराव वाले क्षेत्रों, घाटियों और बांधों के आसपास जाने से बचने की अपील की है। राष्ट्रीय मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार, मक्का, मदीना, असीर,

अल-बहा और जाज़ान सहित कई क्षेत्रों में मध्यम से भारी गरज के साथ बारिश होने की संभावना है। बारिश के दौरान अचानक बाढ़, ओलावृष्टि और तेज हवाओं का खतरा भी जताया गया है। मक्का क्षेत्र के ताइफ, अल-कामिल और अधम समेत आसपास के इलाकों के लिए लाल चेतावनी जारी की गई है। मौसम विभाग ने बताया कि कुछ इलाकों में तेज हवाओं के कारण धूल और रेत उड़ने से दृश्यता भी प्रभावित हो सकती है। तटीय क्षेत्रों में रात और सुबह के समय कोहरा छाने की संभावना भी है।

सऊदी अरब के नागरिक सुरक्षा अधिकारियों ने लोगों से मौसम संबंधी आधिकारिक निर्देशों का पालन करने और बाढ़ संभावित क्षेत्रों, घाटियों तथा पानी जमा होने वाले स्थानों से दूर रहने की सलाह दी है। विशेष रूप से यात्रियों को खराब मौसम के दौरान अनावश्यक यात्रा से बचने और स्थानीय प्रशासन की चेतावनियों पर नजर रखने को कहा गया है।

भाजपा के रक्षा बंधन में भगदड़, महिला की मौत

बरेली। बरेली क्लब मैदान में भाजपा मेयर डॉ. उमेश गौतम और उनके बेटे पार्थ गौतम फाउंडेशन की ओर से आयोजित रक्षाबंधन कार्यक्रम में गुरुवार को भारी भीड़ के कारण अव्यवस्था की स्थिति बन गई। करीब 20 हजार महिलाओं के पहुंचने का दावा किया गया। गर्मी, उमस और भीड़ के दबाव के बीच कई महिलाएं बेहोश हो गईं और कुछ घायल भी हुईं। एक महिला की इलाज के दौरान मौत होने की भी खबर सामने आई है।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महिलाओं को मेयर को राखी बांधने के लिए बुलाया गया था। सुबह से ही महिलाओं का पहुंचना शुरू हो गया और कुछ ही समय में

कार्यक्रम स्थल पर भारी भीड़ जमा हो गई। भीड़ बढ़ने के साथ मंच के आसपास दबाव बढ़ गया और कई महिलाएं बैरिकेडिंग पार कर मंच की ओर जाने लगीं। इस दौरान धक्का-मुक्की में कई महिलाएं गिर गईं तथा कुछ महिलाएं गर्मी और भीड़ के दबाव के कारण बेहोश हो गईं। उन्हें एंबुलेंस के माध्यम से अस्पताल पहुंचाया गया।

कार्यक्रम में उपहार और साड़ियां वितरित किए जाने के दौरान भी भीड़ का दबाव बढ़ने की जानकारी सामने आई है। उपहार लेने के लिए महिलाओं में होड़ मचने से धक्का-मुक्की की स्थिति और गंभीर हो गई। कुछ महिलाओं ने अव्यवस्था के दौरान सामान और आभूषण गायब होने की शिकायत भी की।

भारी भीड़ के बीच कई बच्चे भी अपने परिजनों से बिछड़ गए। कार्यक्रम स्थल से लगातार लाउडस्पीकर के माध्यम से बच्चों और उनके परिजनों को लेकर घोषणाएं की जाती रहीं। मौके पर टूटी चूड़ियां, चप्पल और अन्य सामान बिखरा दिखाई दिया।

रिपोर्टों के मुताबिक, चंद्रगुप्तपुरम निवासी 45 वर्षीय मधु सिंह की कार्यक्रम के दौरान तबीयत बिगड़ गई। उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। हालांकि, इस घटना को लेकर अलग-अलग रिपोर्टों में पुलिस की ओर से शुरुआती तौर पर मृत्यु की पुष्टि से इनकार किए जाने की बात भी सामने आई थी।

मामले की एक अन्य महत्वपूर्ण बात यह सामने आई कि पुलिस के अनुसार कार्यक्रम की पूर्व सूचना पुलिस को नहीं दी गई थी। भीड़ की स्थिति की जानकारी मिलने के बाद पुलिस, यातायात पुलिस और संबंधित अधिकारियों को मौके पर भेजा गया तथा यातायात व्यवस्था को संभाला गया।

संपादकीय

नारी शक्ति नहीं, नारी समानता की जरूरत

महिला समानता दिवस केवल एक स्मृति दिवस नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के उस लंबे संघर्ष का प्रतीक है जिसने यह सिद्ध किया कि किसी भी समाज की वास्तविक प्रगति उसकी महिलाओं की स्थिति से मापी जाती है। जब किसी बेटी को शिक्षा का अधिकार मिलता है, किसी महिला को समान काम के लिए समान वेतन मिलता है, किसी माँ को सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अवसर मिलता है और किसी युवती को अपने सपनों का चुनाव करने की स्वतंत्रता प्राप्त होती है, तभी लोकतंत्र अपने वास्तविक अर्थों में जीवंत होता है। यही कारण है कि प्रत्येक वर्ष 26 अगस्त को महिला समानता दिवस मनाया जाता है ताकि समाज को यह याद दिलाया जा सके कि समानता कोई उपकार नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का मौलिक अधिकार है।

मानव इतिहास के अधिकांश कालखंडों में महिलाओं ने अनेक प्रकार की असमानताओं का सामना किया। उन्हें शिक्षा, संपत्ति, मतदान, रोजगार और निर्णय लेने के अधिकारों से वंचित रखा गया। अनेक देशों में महिलाओं को नागरिक अधिकार प्राप्त करने के लिए दशकों तक आंदोलन करना पड़ा। उनके संघर्ष ने यह सिद्ध किया कि समान अधिकार केवल कानून बनाने से नहीं आते, बल्कि समाज की सोच बदलने से आते हैं। आज भले ही दुनिया बहुत आगे बढ़ चुकी हो, फिर भी समानता का सपना पूरी तरह साकार नहीं हुआ है। अनेक स्थानों पर महिलाएं आज भी भेदभाव, हिंसा, असमान वेतन और सामाजिक रूढ़ियों से जूझ रही हैं।

भारत की सांस्कृतिक परंपरा में नारी को शक्ति, ज्ञान और समृद्धि का स्वरूप माना गया है। दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मी की आराधना करने वाला समाज जब अपनी ही बेटियों को समान अवसर नहीं देता, तब यह विरोधाभास स्पष्ट दिखाई देता है। हमारे संविधान ने आरंभ से ही महिलाओं और पुरुषों को समान नागरिक अधिकार प्रदान किए। समानता, स्वतंत्रता और गरिमा के सिद्धांतों ने महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, सार्वजनिक जीवन और न्याय पाने का अधिकार दिया। यही संवैधानिक दृष्टि आधुनिक भारत की सबसे बड़ी शक्ति है।

स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय महिलाओं की भूमिका अद्भुत रही। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का साहस, सरोजिनी नायडू का नेतृत्व, अरुणा आसफ अली का संघर्ष और कस्तूरबा गांधी का त्याग इस बात के प्रमाण हैं कि राष्ट्र निर्माण में महिलाओं का योगदान किसी भी पुरुष से कम नहीं रहा। उन्होंने केवल आंदोलन का समर्थन नहीं किया, बल्कि स्वयं नेतृत्व करते हुए सामाजिक परिवर्तन की दिशा तय की।

स्वतंत्र भारत की नींव में महिलाओं के इसी साहस और समर्पण की गहरी छाप है। शिक्षा महिला समानता की सबसे मजबूत आधारशिला है। एक शिक्षित लड़की केवल अपना भविष्य नहीं बदलती, बल्कि पूरे परिवार और समाज की दिशा बदल देती है। जब बेटियां विद्यालय जाती हैं तो बाल विवाह कम होते हैं, स्वास्थ्य बेहतर होता है, आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ती है और अगली पीढ़ी अधिक जागरूक बनती है। पिछले कुछ वर्षों में भारत में बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक प्रयास हुए हैं, जिनके कारण विद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों में लड़कियों की भागीदारी बढ़ी है। फिर भी ग्रामीण क्षेत्रों, आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों और कुछ सामाजिक समूहों में शिक्षा की असमानता अब भी चुनौती बनी हुई है।

आर्थिक आत्मनिर्भरता महिला सम्मान का दूसरा महत्वपूर्ण स्तंभ है। जब किसी महिला के पास अपनी आय होती है तो उसके निर्णय लेने का अधिकार भी मजबूत होता है। वह परिवार की आर्थिक योजनाओं में भागीदार बनती है, अपने बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य पर बेहतर निवेश कर पाती है और कठिन परिस्थितियों में स्वयं को सुरक्षित रख सकती है। स्वयं सहायता समूहों, लघु उद्योगों, हस्तशिल्प, कृषि और उद्यमिता के माध्यम से लाखों भारतीय महिलाओं ने अपनी पहचान बनाई है। अनेक गांवों में महिलाओं ने छोटे व्यवसायों को सफल बनाकर यह सिद्ध किया है कि अवसर मिलने पर वे आर्थिक परिवर्तन की सबसे बड़ी वाहक बन सकती हैं।

सरकारी स्कूल सोशल मीडिया के लिए मंच नहीं हैं

डॉ. सत्यवान सौरभ

आजकल सरकारी स्कूलों के प्रति लोगों का नजरिया एक चलन बनता जा रहा है, और यह अच्छा नहीं है। फोन, कैमरा और कैमरा-युक्त स्मार्टफोन होते ही लगभग कोई भी सरकारी स्कूल में जाकर शिक्षकों से सवाल पूछ सकता है, कक्षाओं की तस्वीरें खींच सकता है और कुछ ही मिनटों में पूरी शिक्षा व्यवस्था के बारे में अपनी राय बना सकता है। कभी-कभी, यह इरादा नेक होता है। नागरिकों को शिक्षा की गुणवत्ता, सार्वजनिक संस्थानों के कामकाज और बच्चों के भविष्य के बारे में चिंतित होने का पूरा अधिकार है।

इसका मतलब यह है कि एक सीधा-सा सवाल अक्सर उठाया जाता है, लेकिन उस पर शायद ही कभी ध्यान दिया जाता है: निरीक्षण को लेकर यह उत्साह अक्सर सरकारी स्कूलों तक ही सीमित क्यों रहता है? कितनी बार स्वघोषित निरीक्षक बड़ी मुश्किल से और घड़ी की चुभती निगाहों से देखते हुए कुलीन निजी स्कूलों में घुसते हैं और वहाँ की फीस, बुनियादी ढाँचे, प्रवेश नीतियों, शिक्षकों के कार्यभार, परिवहन या अन्य किसी भी चीज के बारे में और भी अटपटे सवालों का सामना करते हैं? लोग महंगे निजी स्कूलों के गेट पर कैमरा लेकर घुस जाते हैं और शिक्षकों से सवाल पूछने लगते हैं। जवाब स्पष्ट है। हर निजी स्कूल की अपनी विशिष्ट प्रवेश प्रक्रिया, सुरक्षा, प्रशासन और फोटोग्राफी/रिकॉर्डिंग की सीमाएँ होती हैं। बिना अनुमति के किसी को भी कक्षाओं में घूमने की अनुमति नहीं दी जाएगी। दूसरी ओर, सरकारी स्कूलों में अक्सर खुला और सुलभ वातावरण होता है। वे समाज के कमजोर वर्गों और निम्न आर्थिक स्तर के बच्चों का पालन-पोषण करते हैं। वे खुले तो हैं, लेकिन नियमों से मुक्त नहीं हैं। हर पहुँच का मतलब पूर्ण अधिकार नहीं होता।

सरकारी विद्यालयों के शिक्षक सरकार, विद्यालय प्रशासन, अभिभावकों, छात्रों और कानून के प्रति उत्तरदायी होते हैं। उन्हें उचित संस्थागत माध्यमों से अपने पेशेवर कर्तव्यों के संबंध में पूछताछ का अधिकार और दायित्व दोनों है। हालांकि, उचित निरीक्षण और अनौपचारिक निगरानी में स्पष्ट अंतर होता है। अधिकृत निरीक्षण प्रशासन के निर्धारित ढांचे के भीतर होता है। इसके लिए प्रक्रियाएं, रिकॉर्ड, जिम्मेदारियां और जवाबदेही आवश्यक हैं। किसी परिसर में मोबाइल फोन रखना और बिना अनुमति के शिक्षकों की रिकॉर्डिंग करना दिखावा हो सकता है, लेकिन दिखावा निरीक्षण नहीं है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि शैक्षणिक संस्थानों में पारदर्शिता और गरिमा की आवश्यकता है।

यहां एक और बड़ा सवाल उठता है: शिक्षकों की गरिमा। शिक्षक कक्षाओं में बैठे सरकारी अधिकारी नहीं होते। वे विशेषज्ञ होते हैं जो बच्चों के बौद्धिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास के लिए जिम्मेदार होते हैं। ऐसी प्रक्रियाएं होनी चाहिए जिनसे यह पता चल सके कि कोई शिक्षक अपने कर्तव्य में विफल हो रहा है, इसकी जांच की जाए और यदि शिक्षक वास्तव में विफल हो रहा है तो सुधारात्मक कार्रवाई की जाए। हालांकि, आपको यह ध्यान रखना चाहिए कि शिक्षकों को सार्वजनिक रूप से अपमानित करना, बिना अनुमति के उनकी रिकॉर्डिंग करना या सोशल मीडिया पर चुनिंदा वीडियो पोस्ट करना यह जरूरी नहीं दशार्ता कि इससे शिक्षा का स्तर बेहतर हो रहा है। इसके विपरीत, इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। यदि हर बातचीत सोशल मीडिया पर वायरल होने की संभावना बन जाए, तो शिक्षक छात्रों के साथ स्वाभाविक रूप से बातचीत करने की बजाय उनके द्वारा रिकॉर्ड किए जाने को लेकर अधिक चिंतित हो सकते हैं। कक्षा धीरे-धीरे एक प्रदर्शन स्थल में बदल सकती है और वायरल कंटेंट की होड़ में शिक्षा का उद्देश्य भुलाया जा सकता है। इसका यह मतलब बिलकुल नहीं है कि सरकारी स्कूलों को जांच से छूट मिलनी चाहिए। बल्कि इसके विपरीत।

भारत-अमेरिका दोस्ती की गर्माहट, एच-1बी का झटका: भारतीय प्रतिभा पर 99 लाख का वीजा बम -विश्व मंच पर भारत की निर्णाय कूटनीतिक अग्निपरीक्षा!

भारत-अमेरिका दोस्ती की गर्माहट के बीच एच -1बी वींजा का ठंडा झटका: 99 लाख रुपये का प्रस्ताव, 60 दिन की राहत पर भी संकट -समग्र व्यापक विश्लेषण

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर भारत और अमेरिका के संबंधों की वर्तमान तस्वीर बेहद दिलचस्प और कई स्तरों पर विरोधाभासी दिखाई दे रही है।एक ओर वाशिंगटन और नई दिल्ली के बीच रणनीतिक,आर्थिक,रक्षा,तकनीकी और कूटनीतिक साझेदारी लगातार गहरी होती दिखाई दे रही है,वहीं दूसरी ओर ट्रंप प्रशासन की आव्रजन नीतियां भारतीय पेशेवरों के लिए नई चिंताएं पैदा कर रही हैं।हालिया घटनाक्रम में अमेरिका के भारत में राजदूत और राष्ट्रपति ट्रंप के दक्षिण एवं मध्य एशिया के विशेष दूत सर्जियो गोर का श्रीनगर दौरा विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहा।19 अगस्त 2026 को कश्मीर यात्रा के दौरान उन्होंने जम्मू- कश्मीर को भारत का महत्वपूर्ण हिस्सा बताया और क्षेत्र में सुरक्षा सुधारों का उल्लेख करते हुए अमेरिकी यात्रा चेतावनी को कम करने की संभावना पर भी विचार करने की बात कही। यह बयान इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि पाकिस्तान ने इस पर औपचारिक आपत्ति जताई। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि यह घटनाक्रम भारत-अमेरिका संबंधों में उस व्यापक बदलाव का हिस्सा है जिसमें दोनों देश हिंद-प्रशांत, रक्षा सहयोग,आतंकवाद-रोधी सहयोग, सेमीकंडक्टर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अंतरिक्ष उन्नत तकनीक और आपूर्ति- श्रृंखला सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में साझेदारी बढ़ा रहे हैं।अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर ने हाल में भारत-अमेरिका संबंधों को वैश्विक स्तर पर निर्णायक महत्व का बताया है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तथा राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच व्यक्तिगत संबंधों को भी इस साझेदारी का महत्वपूर्ण आधार बताया। अमेरिका और भारत के बीच व्यापार समझौते को लेकर बातचीत तथा आर्थिक सहयोग बढ़ाने की कोशिशें भी जारी हैं।लेकिन इसी सकारात्मक कूटनीतिक वातावरण के बीच अमेरिका की एच -1बी वीजा नीति भारतीय आईटी पेशेवरों और अमेरिकी तकनीकी उद्योग दोनों के सामने एक बड़ी चुनौती बनकर उभरी है।अमेरिकी गृह सुरक्षा विभाग यानी डिपार्टमेंट ऑफ होमलैंड सिक्योरिटी (डीएचएस) ने 24 अगस्त 2026 को एच-1 बी के वार्षिक कैप के अंतर्गत आने वाली याचिकाओं पर 103,265 डॉलर का अतिरिक्त शुल्क लगाने का प्रस्ताव रखा है। भारतीय मुद्रा में यह राशि लगभग 99 लाख रुपये के आसपास बैठती है। जो भारत -अमेरिका दोस्ती की गर्माहट के बीच एच -1बी वींजा का सटिकाता से ठंडा झटका हैं।

साथियों,जब एक ओर भारत इसी महत्वपूर्ण दौर में एक साथ कई वैश्विक मोर्चों पर अपनी आर्थिक और रणनीतिक स्थिति मजबूत कर रहा है।विदेशमंत्री ने 23-24 अगस्त 2026 को रूस की यात्रा कर भारत- रूस व्यापार आर्थिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी सहयोग पर उच्चस्तरीय वार्ता की और 24 अगस्त को राष्ट्रपति से मुलाकात कर पीएम का संदेश दिया; यह संवाद रूस के साथ रणनीतिक साझेदारी तथा आगामी उच्चस्तरीय संपर्कों की तैयारी के लिहाज से महत्वपूर्ण रहा।वहीं वाणिज्य एवं उद्योगमंत्री 24-27 अगस्त को जापान में बड़े कारोबारी प्रतिनिधिमंडल के साथ निवेश,व्यापार, सेमीकंडक्टर, ऑटोमोबाइल,स्वच्छ ऊर्जा और तकनीकी सहयोग बढ़ाने के प्रयास में हैं।इसी बीच वित्तमंत्री निर्मला 25 अगस्त- 2 सितंबर तक कनाडा और अमेरिका की यात्रा पर हैं, जहां निवेश आकर्षित करने,आर्थिक- व्यापारिक संबंध मजबूत करने और वैश्विक वित्तीय मुद्दों पर भारत का पक्ष रखने का उद्देश्य है। ऐसे समय अमेरिका द्वारा नए एच-1बी कैप-सब्जेक्ट आवेदनों पर 1,03,265 डॉलर के प्रस्तावित अतिरिक्त शुल्क ने भारतीय आईटी पेशेवरों और अमेरिकी कंपनियों के लिए नई चिंता पैदा कर दी है। इस प्रकार रूस में रणनीतिक साझेदारी, जापान में व्यापार-विनिवेश और अमेरिका में आर्थिक संवाद,तीनों यात्राएं मिलकर भारत की बहु- आयामी वैश्विक रणनीति को दशार्ती हैं।

साथियों यहां सबसे महत्वपूर्ण बात यह समझना आवश्यक है कि यह राशि कोई सामान्य वीजा आवेदन शुल्क नहीं है जिसे हर भारतीय कर्मचारी अपनी जेब से देगा; यह प्रस्तावित अतिरिक्त शुल्क मुख्यतः नियोक्ता द्वारा एच -1बी पिटीशन दाखिल करते समय भुगतान किया जाना है और इसके ऊपर अन्य लागू शुल्क भी अलग रहेंगे।डीएचएस का प्रस्ताव वार्षिक एच -1बी कैप के अंतर्गत आने वाली याचिकाओं पर लागू होगा। वर्तमान व्यवस्था में नियमित श्रेणी के लिए 65,000 और अमेरिकी संस्थान से मास्टर या उससे उच्च डिग्री प्राप्त करने वालों के लिए अतिरिक्त 20,000, यानी कुल 85,000 कैप-सब्जेक्ट स्थान होते हैं।डीएचएस का अनुमान है कि प्रस्तावित शुल्क से लगभग 8.8 अरब डॉलर सालाना राजस्व प्राप्त हो सकता है। विभाग का तर्क है कि यह धन आव्रजन प्रणाली के प्रशासन, जांच- पड़ताल, धोखाधड़ी रोकथाम, राष्ट्रीय सुरक्षा संबंधी जांच,आव्रजन अदालतों और संबंधित सरकारी व्यवस्थाओं की लागत में उपयोग किया जाएगा। साथियों,भारतीय पेशेवरों के लिए यह प्रस्ताव इसलिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि एच -1बी कार्यक्रम में भारत लंबे समय से सबसे बड़ा लाभार्थी रहा है। अमेरिकी तकनीकी कंपनियों,आईटी सेवाओं,इंजीनियरिंग,वित्त, स्वास्थ्य और अन्य विशेषीकृत क्षेत्रों में बड़ी संख्या

में भारतीय पेशेवर एच -1बी मार्ग से अमेरिका पहुंचते हैं। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, वित्तीय वर्ष 2025 में भारतीय नागरिकों को दिए गए एच -1बी वीजा/अनुमोदनों में उनकी हिस्सेदारी लगभग 70 प्रतिशत रही।इसलिए अमेरिकी कंपनियों के लिए विदेशी प्रतिभाओं को नियुक्त करना यदि अचानक बहुत महंगा हो जाता है, तो इसका असर भारतीय प्रतिभा पर अनुपात से अधिक पड़ सकता है।हालांकि इस पूरे घटनाक्रम को केवल भारतीयों पर 99 लाख रुपये का वीजा शुल्क कहना तथ्यात्मक रूप से अधूरा होगा। प्रस्तावित 103,265 डॉलर शुल्क नियोक्ता-पक्ष का अतिरिक्त शुल्क है और अभी अंतिम नियम नहीं बना है। प्रस्ताव पर सार्वजनिक टिप्पणियों की प्रक्रिया होनी है तथा उसके बाद अंतिम निर्णय लिया जाएगा। इसलिए फिलहाल भारतीय विद्यार्थियों, कर्मचारियों या कंपनियों को यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि 99 लाख रुपये का शुल्क आज से लागू हो गया है।

साथियों, फिर भी इसके संभावित आर्थिक प्रभाव को कम करके नहीं आंका जा सकता।यदि किसी अमेरिकी कंपनी को विदेश से किसी कुशल पेशेवर को नियुक्त करने के लिए एक लाख डॉलर से अधिक का अतिरिक्त खर्च उठाना पड़े, तो वह भर्ती का निर्णय कई बार सोचेगी। यहीं से अमेरिकी फर्स्ट की सोच शुरू होगी कंपनियां संभवतः पहले से अमेरिका में काम करने के अधिकार वाले कर्मचारियों को प्राथमिकता देंगी, विदेशी उम्मीदवारों की जगह घरेलू प्रतिभाओं को प्रशिक्षित करने का प्रयास करेंगी अथवा अपनी परियोजनाओं को अमेरिका के बजाय भारत जैसे देशों में संचालित करने का विकल्प चुनेंगी। यही कारण है कि इस प्रस्ताव का प्रभाव केवल भारतीय पेशेवरों तक सीमित नहीं रहेगा; इसका असर अमेरिकी कंपनियों की लागत, प्रतिभा- प्रबंधन और प्रतिस्पर्धात्मकता पर भी पड़ सकता है।

साथियों, यहीं से भारत के लिए संकट के भीतर अवसर की संभावना भी जन्म लेती है। यदि अमेरिकी कंपनियां विदेशी प्रतिभाओं की भर्ती महंगी होने के कारण अपने कार्यों को भारत में ही संचालित करने लगती हैं,तो भारतीय आईटी सेवा क्षेत्र,ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर, सॉफ्टवेयर विकास, अनुसंधान एवं विकास और डिजिटल बुनियादी ढांचे को लाभ मिल सकता है। भारत में बैठे इंजीनियर अमेरिकी कंपनियों के लिए वही काम कर सकते हैं जिसे करने के लिए पहले उन्हें अमेरिका भेजा जाता था। इस प्रकार संभावित ब्रेन ड्रेन का एक हिस्सा ब्रेन गेन या ब्रेन सकुर्लेशन में बदल सकता है।भारतीय आईटी कंपनियों के लिए तस्वीर मिश्रित है। टीसीएस ,इनफोसिस , विप्रो जैसी कंपनियां अमेरिकी बाजार में बड़े पैमाने पर सेवाएं देती हैं और उनके बिजनेस मॉडल में अमेरिका में मौजूद विशेषज्ञ कर्मचारियों की भूमिका महत्वपूर्ण है। यदि ऑन-साइट एच -1बी नियुक्तियों की लागत अत्यधिक बढ़ती है, तो कंपनियों पर लागत और मार्जिन का दबाव आ सकता है। अमेरिकी टेक्नोलॉजी कंपनियों के सामने भी यही दोधारी चुनौती होगी।गूगल, माइक्रोसॉफ्ट , एप्पल और अनेक अन्य कंपनियां वैश्विक प्रतिभा पर निर्भर हैं। यदि उच्च-कौशल विदेशी कर्मचारियों को नियुक्त करना महंगा और जटिल हो जाता है,तो अल्पकाल में अमेरिकी कंपनियों की भर्ती लागत बढ़ सकती है और प्रतिभा उपलब्धता प्रभावित हो सकती है।

साथियों, इस नीति का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू है एच -1बी नौकरी समाप्त होने के बाद मिलने वाली 60 दिन की ग्रेस अवधि। वर्तमान नियमों के तहत पात्र एच -1बी कर्मचारियों को नौकरी समाप्त होने के बाद सामान्यतः अधिकतम 60 दिन या उनके अधिकृत प्रवास की अवधि समाप्त होने तक, जो पहले हो, नई नौकरी खोजने, स्टेटस बदलने या अमेरिका छोड़ने की तैयारी का अवसर मिलता है। लेकिन डीएचएस ने इस सुविधा को समाप्त करने का प्रस्ताव भी आगे बढ़ाया है।6 अगस्त 2026 को इस प्रस्ताव को व्हाइट हाउस के ऑफिस ऑफ इनफार्मेशन एंड रेगुलेटरी अफेयर्स के पास समीक्षा के लिए भेजे जाने की रिपोर्ट है। अभी यह नियम समाप्त नहीं हुआ है।यदि भविष्य में यह प्रस्ताव अंतिम रूप से लागू होता है, तो इसका प्रभाव एच -1बी कर्मचारियों और उनके परिवारों पर अत्यंत गंभीर हो सकता है। आज नौकरी जाने के बाद कर्मचारी के पास नया नियोक्ता खोजने के लिए कुछ समय होता है; लेकिन यदि यह सुरक्षा हटा दी जाती है तो नौकरी समाप्त होते ही आव्रजन स्थिति को लेकर अनिश्चितता तेजी से बढ़ सकती है। इससे विशेष रूप से वे भारतीय पेशेवर प्रभावित होंगे जो अमेरिका में लंबे समय से कार्यरत हैं, ग्रीन कार्ड की लंबी कतार में हैं या परिवार सहित अमेरिका में जीवन स्थापित कर चुके हैं।जो एफ-1 विद्यार्थियों और ओपीटी कार्यक्रम को लेकर भी व्यापक नीति -सख्ती की चर्चा इस पूरे वातावरण को और जटिल बनाती है।तथा अमेरिका में पढ़ने वाला भारतीय विद्यार्थी सामान्यतः शिक्षा के बाद ओपीटी के माध्यम से व्यावहारिक कार्य-अनुभव प्राप्त कर सकता है और आगे चलकर एच -1बी के रास्ते पर जा सकता है।

साथियों, यहां भारत-अमेरिका संबंधों का सबसे बड़ा रणनीतिक प्रश्न सामने आता है। एक तरफ अमेरिका भारत को चीन के मुकाबले महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदार, इंडो-पैसिफिक में प्रमुख शक्ति और उन्नत तकनीक का महत्वपूर्ण भागीदार मानता है। दूसरी ओर यदि उसकी आव्रजन नीति भारतीय उच्च-कौशल प्रतिभा के लिए लगातार बाधाएं पैदा करती है, तो आर्थिक संबंधों में असंतुलन की धारणा पैदा हो सकती है। भारत इसे औपचारिक व्यापार शुल्क की तरह नहीं, लेकिन व्यापक आर्थिक दृष्टि से एक प्रकार की गैर-टैरिफ बाधा के रूप में देख सकता है, खासकर तब जब भारतीय आईटी कंपनियों और पेशेवरों की अमेरिकी बाजार में बड़ी भूमिका हो।हालांकि इसे तुरंत भारत-अमेरिका संबंधों में संकट कहना भी अतिशयोक्ति होगी। कूटनीति केवल एक नीति से नहीं चलती। रक्षा, सेमीकंडक्टर,एआई , अंतरिक्ष ऊर्जा, आतंकवाद-रोधी सहयोग व्यापार और हिंद- प्रशांत जैसे अनेक क्षेत्रों में दोनों देशों के साझा हित इतने व्यापक हैं कि एच -1बी विवाद को उसी व्यापक रणनीतिक संदर्भ में देखना आवश्यक है।हालिया कश्मीर घटनाक्रम भी बताता है कि वाशिंगटन और नई दिल्ली के बीच संवाद का दायरा व्यापक बना हुआ है। अमेरिकी राजदूत का श्रीनगर जाना और वहां जम्मू- कश्मीर को भारत का महत्वपूर्ण हिस्सा बताना निश्चित रूप से एक उल्लेखनीय कूटनीतिक संकेत है, हालांकि इसे अमेरिकी विदेश नीति में पूर्ण औपचारिक बदलाव मानने में अभी सावधानी आवश्यक है।अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि इस पूरे घटनाक्रम का सबसे बड़ा संदेश यही है कि भारत-अमेरिका संबंध आज दो समानांतर पटरी पर चल रहे हैं,रणनीतिक मित्रता और आव्रजन नीति की कठोरता। अमेरिका भारत के साथ तकनीकी और रणनीतिक साझेदारी बढ़ाना चाहता है, लेकिन साथ ही ट्रंप प्रशासन अमेरिकी श्रम बाजार में विदेशी कर्मचारियों की भूमिका को सीमित करने और घरेलू रोजगार को प्राथमिकता देने अमेरिकी फर्स्ट की नीति पर जोर दे रहा है। यही विरोधाभास आने वाले समय में दोनों देशों के आर्थिक संवाद की सबसे कठिन परीक्षा बन सकता है।

चुनावी आहट के बीच राहुल की फिर से लॉन्चिंग

अजय कुमार

15 अगस्त को अधूरा वंदे मातरम गाकर फजीहत झेलने वाला गांधी परिवार और कांग्रेस के दिग्गज नेता अब अपने और खासकर राहुल गांधी के वंदेमातरम के अपमान का बचाव करने के लिये तरह-तरह के स्वांग रचा रहे हैं। अधूरा वंदे मातरम गायन की फजीहत पर पर्दा डालने के लिये सबसे पहले राहुल गांधी संसद मार्ग पहुंच कर धरने पर बैठ गये। वह वहां पैलेट गन से घायल एक युवक की रिपोर्ट लिखाने गये थे, जिसकी जांच पहले ही सुप्रीम कोर्ट के आदेश से चल रही है। अभी तक तो यह भी पता नहीं चला है कि जंतर मंतर पर पैलेट गन चली भी थी या नहीं। पैलेट गन चलने का न कोई वीडियो सामने आया है न ही कोई गवाह। राहुल ने संसद मार्ग थाने पर लगभग चार-पांच घंटे तक धरना प्रदर्शन किया, मजबूरन पुलिस को अज्ञात के खिलाफ रिपोर्ट लिखना पड़ गई। क्योंकि पुलिस ज्यादा बखेड़ा खड़ा नहीं करना चाहती थी।

यह सिलसिला थमा ही था कि राहुल गांधी पुणे पहुंच गये जहां उनके लिये छात्रों की गूंज नाम से इवेंट रखा गया था। नाम तो छात्रों का था लेकिन यहां मोदी को गाली देने वाली एक कथित लोकगायिका मंच पर झंडा लहराते हुए मोदी को कोस रही थी। कोई लड़की राहुल को किस कर रही थी। राहुल ने यहां ऐसा कुछ नहीं कहा जिसे छात्रों की गूंज कहा जा सके। बल्कि वह वहां एक बुर्का और हिजाब पहने एक लड़की के सामने मनुस्मृति पर ज्ञान देने लगे कि मनुस्मृति में महिलाओं के लिये कितना उलटा सीधा बोला गया है, उन्हें आजादी नहीं दी गई है, जबकि वहां बुर्के और हिजाब में खड़ी लड़की के लिये एक शब्द नहीं निकला। वह न इस्लाम की कुरीतियों के बारे में कुछ बोल पाये न ही बाइबिल में महिलाओं के बारे में क्या कहा गया है इस पर उनका मुंह खुला।सबसे बड़ी बात यह थी कि राहुल की रिलॉन्चिंग करते समय भीड़ का इम्पैक्ट दिखाने के लिये इवेंट मैनेजरों ने फुटबॉल वर्ल्ड कप के दौरान का एक वीडियो को राहुल के कार्यक्रम में जुटी भीड़ बताकर प्रमोट कर दिया गया। वैसे ऐसा पहली बार नहीं हुआ है। राहुल गांधी को आगे बढ़ाने और मोदी के समकक्ष दिखाने के लिये अक्सर कांग्रेसी ऐसे पराक्रम करते रहते हैं। कांग्रेस पार्टी और राहुल गांधी जिस तरह के पराक्रम कर रहे हैं उससे लगता है कि कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व के सामने आज सबसे बड़ी चुनौती राजनीतिक विश्वसनीयता और वैचारिक शुचिता का संकट बन चुकी है, खासकर राष्ट्रीय पर्वों और प्रतीकों के प्रति उनकी कथित उदासीनता के बाद जिस प्रकार के राजनीतिक घटनाक्रम देखने को मिल रहे हैं। जब स्वतंत्रता दिवस जैसे पावन अवसर पर राष्ट्रीय गान या राष्ट्रगीत के गायन में त्रुटियां सामने आती हैं और उसकी तीखी आलोचना शुरू होती है, तो उससे ध्यान भटकाने के लिए पार्टी द्वारा एक के बाद एक ऐसे राजनीतिक ड्रामे रचे जाते हैं जो जमीनी हकीकत से कोसों दूर और केवल मीडिया की सुर्खियों में बने रहने की रणनीति का हिस्सा प्रतीत होते हैं। संसद मार्ग थाने पर राहुल गांधी का लंबा धरना और उस मामले में पुलिस पर दबाव बनाकर रिपोर्ट दर्ज कराना, जिसकी विधिवत जांच पहले ही सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों के तहत चल रही हो, केवल प्रशासनिक व्यवस्था को असहज करने और एक कृत्रिम नैरेटिव गढ़ने का प्रयास ही कहा जा सकता है। इस तरह के आयोजनों से यह साफ झलकता है कि कांग्रेस नेतृत्व गंभीर मुद्दों पर वैचारिक स्पष्टता रखने के बजाय तात्कालिक लाभ और सिम्पथी गेन करने की राजनीति में उलझ गया है, जिसके कारण जनता के बीच उनकी छवि एक जिम्मेदार राष्ट्रीय विकल्प के रूप में उभरने के बजाय केवल विरोध की राजनीति करने वाले दल के रूप में सिमट कर रह गई है।

इसी कड़ी में पुणे का वह तथाकथित छात्रों की गूंज कार्यक्रम भी कांग्रेस की दिशाहीन कार्यशैली और इवेंट मैनेजमेंट की राजनीति का एक जीवंत उदाहरण बन गया, जहां छात्रों के मुद्दों पर बात करने के बजाय मंच का इस्तेमाल राजनीतिक एजेंडे और लक्षित बयानों के लिए किया गया।

एक तरफ जहां आयोजनों की भव्यता और भीड़ का झूठा प्रभाव दिखाने के लिए पुरानी या विदेशी फुटेज का सहारा लिया जाता है, वहीं दूसरी तरफ भाषणों और वैचारिक बहसों में भी एकतरफा रुख अपनाया जाता है, जिससे आम जनता के बीच नेतृत्व की परिपक्वता पर गंभीर सवाल खड़े होते हैं। यह विडंबना ही है कि जब राहुल गांधी जैसे नेता देश के पारंपरिक ग्रंथों और सामाजिक व्यवस्थाओं पर मुखर होकर व्याख्या करते हैं, तब वे समाज के एक वर्ग विशेष से जुड़ी कुरीतियों या संवेदनशील धार्मिक पहलुओं पर चुप्पी साध लेते हैं, जिससे उनकी कथनी और करनी में दोहराव का संदेश जाता है।

विकसित भारत की राह में जर्जर शिक्षा व्यवस्था सबसे बड़ा सवाल

ललित गर्ग

भारत आज वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहा है। एक शिक्षक, टूटती दीवारें और घटते सरकारी स्कूल-क्या शिक्षा के बिना 2047 का सपना पूरा होगा? दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में देश की प्रगति, डिजिटल क्रांति, अंतरिक्ष उपलब्धियां, आधारभूत ढांचे का विस्तार और वैश्विक मंच पर बढ़ता प्रभाव निश्चित रूप से गौरव का विषय हैं। लेकिन इसी चमकदार तस्वीर के पीछे यदि हम सरकारी स्कूलों की ओर देखें तो एक दूसरा भारत दिखाई देता है-ऐसा भारत जहां हजारों बच्चे आज भी पर्याप्त शिक्षकों, सुरक्षित भवन, स्वच्छ पेयजल, शौचालय, बिजली और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के लिए संघर्ष कर रहे हैं। सवाल यह है कि जिस शिक्षा-व्यवस्था पर विकसित भारत की नींव रखी जानी है, उसकी बुनियाद ही कमजोर होगी तो 2047 का भारत कितना मजबूत होगा? सरकारी आंकड़े इस चिंता को और गंभीर बनाते हैं। यूडीआईएसई प्लस 2024-25 के अनुसार देश में 1,04,125 स्कूल ऐसे हैं जहां केवल एक शिक्षक कार्यरत है और इन स्कूलों में करीब 33.77 लाख विद्यार्थी पढ़ते हैं। यानी एक शिक्षक को कई कक्षाओं, अनेक विषयों और प्रशासनिक जिम्मेदारियों के बीच बच्चों की शिक्षा संभालनी पड़ रही है। यह केवल संख्या नहीं, बल्कि उन लाखों बच्चों के भविष्य की कहानी है, जिनके लिए सरकारी स्कूल शिक्षा का सबसे सुलभ और कई बार एकमात्र माध्यम हैं।

विडंबना यह है कि उसी देश में हम विश्वस्तरीय विश्वविद्यालयों, आईआईटी, आईआईएम, मेडिकल संस्थानों और अत्याधुनिक शिक्षण परिसरों की चर्चा करते हैं, लेकिन गांव के उस बच्चे की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं देते जो टूटी छत के नीचे बैठकर भविष्य के सपने देख रहा है। कहीं शिक्षक एक है और कक्षाएं पांच। कहीं विद्यालय भवन जर्जर है, कहीं पानी नहीं, कहीं शौचालय नहीं, कहीं बिजली और पंखे नहीं। हाल के महीनों में उत्तर प्रदेश के अनेक जिलों में विद्यार्थियों को अधिक शिक्षक, बेहतर भोजन, पेयजल, पंखे और बुनियादी सुविधाओं की मांग को लेकर सड़कों पर उतरना पड़ा। फतेहपुर में तो लगभग एक हजार विद्यार्थियों ने जर्जर कक्षाओं, रिसती छतों और सुरक्षित पेयजल जैसी मूलभूत सुविधाओं के लिए प्रदर्शन किया। यह स्थिति केवल किसी एक राज्य अथवा किसी एक सरकार की विफलता नहीं है। यह वर्षों से चली आ रही उस प्रशासनिक सोच का परिणाम है जिसमें शिक्षा को प्राथमिकता तो भाषणों में दी गई, लेकिन उसकी गुणवत्ता और जवाबदेही को शासन की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में स्थान नहीं मिला। शिक्षा विभागों में अधिकारियों और कर्मचारियों की बड़ी व्यवस्था है, बजट है, योजनाएं हैं, समितियां हैं, निरीक्षण तंत्र है-फिर भी एक शिक्षक वाले एक लाख से अधिक स्कूल कैसे बने रहे?

भारत को रीसाइक्लिंग केंद्र बनना है, दुनिया का कूड़ाघर नहीं

प्रो. आरके जैन अरिजीत

किसी देश की सीमाएं केवल नक्शे की रेखाएं नहीं; वे मिट्टी, पानी, हवा और आने वाली पीढ़ियों की सुरक्षा की चौकी हैं। जब समुद्र पार से आया जहाज माल नहीं, दूसरे देश का कचरा उगलता है, तो मामला सीमा शुल्क से उठकर राष्ट्र की अस्मिता तक पहुंच जाता है। जून 2026 में तमिलनाडु के तूतीकोरिन बंदरगाह पर वेस्ट पेपर बताकर लाए कंटेनरों से इस्तेमाल प्लास्टिक बोतलें, डिब्बे, थैलियां और विदेशी सड़कों की झाड़-पोंछ निकलना इसी सच्चाई का प्रमाण है। मद्रास हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति डी. भारथा चक्रवर्ती ने इसे नियमों की धज्जियां उड़ाना नहीं, बल्कि भारत की धरती पर कचरा उड़ेलने वाला देशद्रोह का गंभीर रूप कहा। यह शब्द चौंकाते हैं, क्योंकि हम पर्यावरणीय अपराध को अभी तक राष्ट्रीय अपराध की तरह देखना नहीं सीख पाए हैं।

विडंबना की इससे बड़ी तस्वीर क्या होगी—जिस देश में रोज लगभग 1.7 लाख टन नगरपालिका कचरा पैदा होता है, लैंडफिल कराह रहे हैं, नदियां प्लास्टिक से घुट रही हैं और मिट्टी में जहर उतर रहा है, वही भारत विदेशों का कचरा खरीद रहा है। 2024-25 में पुनर्चक्रण योग्य कचरे और स्क्रैप का आयात 12.74 अरब डॉलर पहुंच गया, जबकि 2021 से 2023 के बीच करीब दो करोड़ किलोग्राम प्लास्टिक कचरा (आधिकारिक और अवैध/गलत घोषणा वाले दोनों स्रोतों को मिलाकर) देश में आया। सवाल यह नहीं कि कितना कचरा काम आ सकता है; सवाल है कि जब देश में रीसाइक्लिंग उद्योग के लिए पर्याप्त सामग्री है, तो विदेशी कचरे की जरूरत किसे? यदि जवाब कारोबारी मुनाफा है, तो यह व्यापार नहीं, मुनाफे की पैकिंग में छिपा पर्यावरणीय शोषण है।

यहां एक नए किस्म का उपनिवेशवाद जन्म लेता है। पहले शक्तिशाली देश गरीब देशों की जमीन और संसाधन हड़पते थे; अब अपने कचरे के लिए उन्हीं देशों की कमजोर निगरानी और सस्ते श्रम को खोजते हैं। विकसित देशों में पर्यावरणीय नियम जितने कठोर होते जाते हैं, जहरीला बोझ कमजोर व्यवस्थाओं वाले देशों पर डालने का लालच उतना बढ़ता है। भारत यदि इसे स्वीकार करता है तो वह केवल विदेशी कचरा नहीं खरीद रहा, बल्कि अपने लोगों का स्वास्थ्य, मिट्टी की उर्वरता और नदियों का भविष्य गिरवी रख रहा है। इसे वेस्ट कोलोनियलिज्म कहना अतिशयोक्ति नहीं। कचरा भी सत्ता का औजार हो सकता है—बस उसकी भाषा व्यापार और पुनर्चक्रण की होती है। मद्रास हाईकोर्ट का महत्व यही है कि उसने सवाल को केवल यह कचरा कहां जाए तक सीमित नहीं किया। अदालत ने न दुबई भेजने, न भारत में जलाने-दफनाने की अनुमति स्वीकार की। बासेल कन्वेंशन और खतरनाक अपशिष्ट नियम, 2016 की भावना स्पष्ट है—अवैध कचरा उसी देश को लौटना चाहिए जहां से वह आया है। उसे किसी तीसरे देश के गरीब हिस्से में भेजना समाधान नहीं, अपराध की जिम्मेदारी खिसकाना है। घरेलू भट्टियों में जला देना भी नैतिक विजय नहीं, क्योंकि वही विष धुएं के रूप में लौटेगा। अदालत ने केंद्र से बायोमेडिकल और नगरपालिका कचरे के पुनः निर्यात संबंधी प्रावधानों को स्पष्ट और कठोर बनाने का आग्रह कर जिम्मेदारी को नीति के दरवाजे तक पहुंचा दिया है।

सबसे बड़ा विरोधाभास हमारे नारों में छिपा है। एक ओर स्वच्छ भारत, प्लास्टिक नियंत्रण और आत्मनिर्भरता की घोषणाएं हैं; दूसरी ओर बंदरगाहों पर विदेशी कचरे के कंटेनर खुलते हैं। आत्मनिर्भर भारत का अर्थ उत्पादन में आत्मनिर्भर होना है, तो क्या कचरे में आत्मनिर्भर होने का गौरव नहीं? हम अपना कचरा नहीं संभाल पा रहे और दूसरों का कचरा संभालने को बंदरगाह खोल रहे हैं। मिट्टी, पानी और खाद्य श्रृंखला में घुलते विष आज न दिखें, पर आने वाली पीढ़ियां उनकी कीमत स्वास्थ्य, बीमारी और घटती जीवन-गुणवत्ता से चुकाएंगी।

ऐसी विकास-रफ्तार किस काम की, जिसके पीछे जहरीला पदचिह्न छूटे?समाज की चुप्पी इस कारोबार की सबसे बड़ी ताकत है। यह मामला उतनी बड़ी सार्वजनिक बहस नहीं बन पाया, जितनी बननी चाहिए थी।

पर्यावरण सुरक्षा को राष्ट्रीय सुरक्षा से अलग देखना अब पुरानी सोच है। जैसे सीमा पार हथियारों की तस्करी खतरा है, वैसे ही जहरीला कचरा भी। फर्क इतना—हथियार एक दिन में मारते हैं, कचरा वर्षों में।

हिंदी दैनिक समाचार पत्र
राष्ट्र जगत

राष्ट्र जागरण युवा संगठन की महिला मोर्चा ने अनाथालय में बच्चों के साथ मनाया रक्षाबंधन

राष्ट्र जगत संवाददाता

बरेली। भाई-बहन के अटूट प्रेम, विश्वास और स्नेह का प्रतीक रक्षाबंधन का पर्व राष्ट्र जागरण युवा संगठन की महिला मोर्चा द्वारा सामाजिक सरोकारों के साथ मनाया गया। महिला मोर्चा की जिला अध्यक्ष प्रियंका कपूर के नेतृत्व में संगठन की पदाधिकारियों ने अनाथालय स्थित गुरुकुल पहुंचकर बच्चों के साथ रक्षाबंधन का पर्व हर्षोल्लास एवं आत्मीय वातावरण में मनाया। इस दौरान बच्चों के चेहरों पर मुस्कान लाने और उन्हें परिवार जैसा अपनापन महसूस कराने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत बच्चों को तिलक लगाकर उनकी कलाइयों पर राखी बांधने से हुई। इसके बाद सभी बच्चों को मिठाई खिलाई गई और उन्हें पर्व की शुभकामनाएं दी गईं। महिला मोर्चा की पदाधिकारियों ने बच्चों के साथ समय बिताया, उनका हालचाल जाना और उन्हें शिक्षा के साथ-साथ जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। बच्चों ने भी अपनी खुशी व्यक्त करते हुए सभी अतिथियों का आभार जताया। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष प्रियंका कपूर ने कहा कि रक्षाबंधन केवल भाई-बहन के रिश्ते का पर्व नहीं, बल्कि प्रेम, सुरक्षा, विश्वास और सामाजिक जिम्मेदारी का भी संदेश देता है। उन्होंने कहा कि समाज के उन बच्चों के साथ खुशियां साझा करना, जो परिवार के स्नेह से वंचित हैं, हम सभी का नैतिक दायित्व है। ऐसे आयोजनों से बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ता है और उन्हें यह एहसास होता है कि समाज उनके साथ खड़ा है।
महानगर अध्यक्ष सुषमा गौतम ने कहा कि समाज के हर वर्ग को ऐसे सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए, ताकि जरूरतमंद बच्चों के जीवन में खुशियों के रंग भरे जा सकें। जिला संयोजक अनिता गुप्ता ने कहा कि सेवा और संवेदना ही संगठन की सबसे बड़ी पहचान है। जिला सचिव मालती कश्यप ने भी बच्चों को शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्वल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम के दौरान महिला मोर्चा की सभी पदाधिकारियों ने बच्चों के साथ मिलकर रक्षाबंधन का पर्व उत्साहपूर्वक मनाया और भविष्य में भी इस प्रकार के सामाजिक एवं सेवा कार्य निरंतर आयोजित करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर संगठन की महिला कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा।

शानू काज़मी को लगातार पांचवीं साल बाँधी बहन कीर्ति कश्यप ने राखी।

राष्ट्र जगत संवाददाता

जैसा कि रक्षाबंधन भाई बहन के रिश्ते का अटूट बंधन है,अल्पसंख्यक मोर्चा मुस्लिम भाजपा नेता, एवं राष्ट्र जागरण युवा संगठन अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष शानू काजमी को पूर्व आंवला सांसद धर्मेंद्र कश्यप की बेटी,भाजपा नेत्री एडवोकेट कीर्ति कश्यप ने बांधी राखी ,शानू काजमी ने बताया वो लगातार 5 साल से कीर्ति कश्यप के कांधारपुर आवास पर पहुंचकर राखी बंधवाते है,उन्होंने कहा भाई ,बहन का हमारा रिश्ता ऐसे ही हमेशा सलामत रहे रब से दुआ करता हूं,बहन आने वाले समय में बड़े पद पर पहुंचे ये भी दुआं करता हूं, कीर्ति हमेशा मुझे सगे भाई जैसा सम्मान देती है और राखी बांधती है,मुझे बे सबरी से इंतेज़ार रहता है राखी बंधवाने का।

जगत डायरी

21 वर्षों से मुस्लिम महिलाओं से बंधवा रहे राखी

राष्ट्र जगत संवाददाता

बरेली। रक्षा, शान्ति,एकता और सदभाव का रक्षा बंधन पर्व मानव सेवा क्लब ने बड़े उमंग और उल्लास के साथ मनाया। क्लब के अध्यक्ष सुरेन्द्र बीनू सिन्हा ने 2 मुस्लिम महिलाओं से राखी बंधवाकर सौहार्द और सदभावना का परिचय दिया।उन्होंने बताया कि जखीरा निवासी पोस्ट वार्डन आसिया अली और मलूकपुर निवासी पूर्व सभासद शमीम बानो से राखी पिछले 21 वर्षों से बंधवा रहे हैं।

रक्षाबंधन पर बल्लियां में पुलिस का कड़ा पहरा, चौकी प्रभारी ने संभाली सुरक्षा की कमान

संवाददाता अमित कुमार पाठक

बरेली आंवला तहसील के विकासखंड आलमपुर जाफराबाद के कस्बा बल्लियां में रक्षाबंधन पर्व को लेकर कस्बा बल्लियां में पुलिस प्रशासन पूरी तरह मुस्तैद नजर आया। त्योहार पर बाजारों और प्रमुख स्थानों पर बढ़ी भीड़ को देखते हुए बल्लियां चौकी प्रभारी शैलेंद्र कुमार तोमर ने पुलिस टीम के साथ सुरक्षा व्यवस्था की कमान संभाली।पुलिस टीम ने पूरे कस्बे में लगातार भ्रमण कर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में पुलिस की सक्रिय मौजूदगी बनी रही और कानून-व्यवस्था पर विशेष नजर रखी गई।चौकी प्रभारी ने पुलिसकर्मियों को सतर्क रहने तथा किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना मिलने पर तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए। पुलिस की मुस्तैदी के चलते रक्षाबंधन पर्व के दौरान कस्बे में शांतिपूर्ण माहौल बना रहा।रक्षाबंधन का पर्व शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न होने के बाद स्थानीय लोगों ने पुलिस की सक्रियता और सुरक्षा व्यवस्था की सराहना की। पुलिस प्रशासन की सतर्कता से त्योहार के दौरान लोगों में सुरक्षा का भरोसा कायम रहा।

रक्षाबंधन पर भी खाली रही आउटसोर्स कर्मियों की जेब

बरेली। बरेली मण्डल के राजकीय एवं अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत आउटसोर्स कर्मियों को हर माह की तरह जुलाई माह का मानदेय रक्षाबंधन जैसे महत्वपूर्ण एवं पारिवारिक भावनाओं से जुड़े त्योहार पर भी समय से नहीं मिल सका। मानदेय का भुगतान न होने से आर्थिक रूप से सीमित आय पर निर्भर इन कर्मचारियों में गहरी निराशा, पीड़ा और असंतोष देखने को मिल रहा है। इस गंभीर समस्या पर शिक्षणेत्तर कर्मचारी संयुक्त परिषद के वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष हरी शंकर ने कड़ी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आउटसोर्स कर्मी विद्यालयों की व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। वह प्रतिदिन अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन पूरी निष्ठा, ईमानदारी और मेहनत के साथ करते हैं। इसके बावजूद जब उनके श्रम का पारिश्रमिक समय पर नहीं मिलता, तो यह स्थिति कर्मचारियों के लिए अत्यंत पीड़ादायक हो जाती है। हरी शंकर ने कहा कि रक्षाबंधन जैसे पवित्र त्योहार पर भी मानदेय के लिए कर्मचारियों को इंतजार करना पड़ना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। मानदेय न मिलने के कारण निराशा का सामना करना पड़ा है।
उन्होंने कहा कि आउटसोर्स कर्मियों का मासिक मानदेय कोई अतिरिक्त सुविधा नहीं, बल्कि उनके द्वारा किए गए श्रम का निर्धारित पारिश्रमिक है। हरी शंकर ने कहा कि कर्मचारी से समय पर सेवा की अपेक्षा की जाती है, तो उसके श्रम का पारिश्रमिक भी समय पर मिलना चाहिए। त्योहार के अवसर पर मानदेय रोकना या भुगतान में देरी करना सीधे तौर पर उसके परिवार की खुशियों और घरेलू बजट को प्रभावित करता है। उन्होंने कहा कि सीमित मानदेय में अपने परिवार का भरण-पोषण करने वाले आउटसोर्स कर्मियों के लिए समय पर मिलने वाला वेतन अत्यंत महत्वपूर्ण है। महीने भर की मेहनत के बाद यदि मानदेय निर्धारित समय पर उपलब्ध

सिरौली थाना परिसर स्थित भोले बाबा मंदिर में हुआ भव्य भंडारा, रिमझिम बारिश में भी उमड़ा श्रद्धालुओं का सैलाब

राष्ट्र जगत संवाददाता

संवाददाता विवेक गुप्ता

सिरौली, बरेली। सिरौली नगर स्थित थाना परिसर के भोले बाबा मंदिर में श्रद्धा और भक्ति के माहौल के बीच भव्य भंडारे का आयोजन किया गया। भंडारे में उड़द, राजमा, कढ़ी और चावल सहित विभिन्न प्रसाद की व्यवस्था की गई, जिसे श्रद्धालुओं ने बड़े प्रेम और आस्था के साथ ग्रहण किया।
भंडारे का आयोजन भारतीय जनता पार्टी के पूर्व जिला मंत्री अतुल गुप्ता, समाजसेवी एवं किराना स्टोर संचालक प्रदीप गुप्ता, एडवोकेट अभय गुप्ता, जिगर गुप्ता, सुलभ गुप्ता, दिनेश गुप्ता एवं सचिन गुप्ता के सहयोग से कराया गया। भंडारे में बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं गणमान्य लोग मौजूद रहे। इस दौरान सौरभ खत्री, अनिल प्रजापति, जगतपाल प्रजापति, राजू पांडे, नितिन पांडे, कुलदीप देवल सहित अन्य लोग उपस्थित रहे और श्रद्धालुओं को प्रसाद ग्रहण कराया।
भंडारे के दौरान वातावरण पूरी तरह भक्तिमय नजर आया। खास बात यह रही कि रिमझिम बारिश के बावजूद श्रद्धालुओं की आस्था कम नहीं हुई। बड़ी संख्या में भक्त भोले बाबा के मंदिर पहुंचे और श्रद्धापूर्वक प्रसाद ग्रहण किया।
बारिश की फुहारों के बीच भक्तों की लंबी कतार और भंडारे में उमड़ी भीड़ का नजारा देखते ही बन रहा था। आयोजकों एवं सहयोगियों द्वारा श्रद्धालुओं को व्यवस्थित तरीके से प्रसाद वितरित कराया गया।
भक्तों ने भोले बाबा के दर्शन कर सुख-समृद्धि की कामना की। पूरे आयोजन के दौरान हर-हर महादेव और भोले बाबा के जयकारों से

जलभराव की समस्या से परेशान पुलिसकर्मी और आमजन, थाना मितौली के मुख्य द्वार पर भरा पानी

राष्ट्र जगत संवाददाता

मितौली, खीरी। लगातार हो रही बारिश के कारण थाना मितौली के मुख्य प्रवेश द्वार पर गंभीर जलभराव की समस्या उत्पन्न हो गई है। हालात ऐसे हैं कि थाना परिसर में प्रवेश करने के लिए पुलिसकर्मियों, फरियादियों और आम नागरिकों को लगभग 20 फीट लंबे और करीब दो फीट गहरे पानी से होकर गुजरना पड़ रहा है। इससे न केवल आवागमन बाधित हो रहा है, बल्कि दुर्घटना की आशंका भी लगातार बनी हुई है।
स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि कोई घायल या बुजुर्ग व्यक्ति अपनी शिकायत लेकर थाने पहुंचे तो फिसलकर गिरने से उसकी परेशानी और बढ़ सकती है। लोगों का कहना है कि ऐसी स्थिति में किसी भी समय कोई बड़ा हादसा हो सकता है। बरसात के दौरान थाना परिसर का मुख्य मार्ग तालाब जैसा दिखाई देता है, जिससे पुलिसकर्मियों के साथ-साथ फरियादियों को भी भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।इस संबंध में थाना प्रभारी निरीक्षक सहित कई पुलिसकर्मियों से जानकारी लेने का प्रयास किया गया। उनका कहना था कि जलभराव की समस्या लंबे समय से बनी हुई है, लेकिन इसका समाधान किस विभाग के माध्यम से कराया जाना है, यह स्पष्ट नहीं है। संबंधित विभागों के बीच समन्वय के अभाव में समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो पा रहा है।
मामले की जानकारी लेने के लिए खंड विकास अधिकारी मितौली विकास कुमार सिंह से उनके सीयूजी और निजी मोबाइल नंबर पर संपर्क करने का प्रयास किया

गया, लेकिन फोन रिसीव नहीं हुआ। इसके बाद उनके आवास पर जाकर भी संपर्क करने का प्रयास किया गया, जहां मौजूद कर्मचारियों ने बताया कि अधिकारी अस्वस्थ होने के कारण उपलब्ध नहीं हैं। लगभग दो घंटे तक इंतजार करने के बाद भी उनसे मुलाकात नहीं हो सकी, जिसके बाद वापस लौटना पड़ा। इस दौरान वहां मौजूद सीसीटीवी कैमरों में पूरी गतिविधि दर्ज होने की बात भी कही गई।
स्थानीय नागरिकों ने जिला प्रशासन से मांग की है कि थाना मितौली के मुख्य प्रवेश द्वार पर जल निकासी की समुचित व्यवस्था कराई जाए, ताकि पुलिसकर्मियों और फरियादियों को सुरक्षित आवागमन की सुविधा मिल सके तथा भविष्य में किसी भी संभावित दुर्घटना से बचा

राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य में एमजेपी रुहेलखंड विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय खेल

राष्ट्र जगत संवाददाता।

बरेली। महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय बरेली में राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य में 'खेलो इंडिया, जीतेगा भारत' थीम पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय खेल दिवस अभियान का आयोजन 28 से 30 अगस्त 2026 तक किया जा रहा है। यह आयोजन विश्वविद्यालय के पं. दीन दयाल उपाध्याय स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में आयोजित किया जा रहा है।
राज्यपाल/कुलाधिपति के निर्देशों तथा भारत सरकार के फिट इंडिया अभियान के अंतर्गत आयोजित इस कार्यक्रम का मुख्य केंद्र-बिंदु 'एक घंटा खेल के मैदान में' रखा गया है। इसके माध्यम से विश्वविद्यालय के शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों को प्रतिदिन कम से कम एक घंटे खेल एवं शारीरिक गतिविधियों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।
तीन दिवसीय आयोजन के प्रथम दिन बैडमिंटन एवं योग की गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षकों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों ने भी उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों में विशेष उत्साह एवं खेल भावना देखने को मिली।
आयोजन के आगामी दिनों में बैडमिंटन, बास्केटबॉल, वॉलीबॉल, एथलेटिक्स, फुटबॉल सहित विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम में विद्यार्थियों के साथ विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारी भी प्रतिभाग करेंगे। प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक प्रतिभागिता सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न विभागों को भी प्रोत्साहित किया गया है।
विश्वविद्यालय के खेल सचिव प्रो. एस.एस. बेदी ने कहा कि 'खेलो इंडिया, बढ़ेगा इंडिया' केवल एक नारा नहीं, बल्कि स्वस्थ, अनुशासित और सशक्त युवा पीढ़ी के निर्माण का संकल्प है। विश्वविद्यालय स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का निरंतर प्रयास है कि विद्यार्थी केवल पढ़ाई तक सीमित न रहें, बल्कि नियमित रूप से खेल एवं शारीरिक गतिविधियों में सहभागिता करें।
खेल विद्यार्थियों को स्वस्थ शरीर के साथ अनुशासन, नेतृत्व, टीम भावना, आत्मविश्वास और सकारात्मक प्रतिस्पर्धा की भावना प्रदान करते हैं।उन्होंने आयोजन को

परिचय 2026' में गूंजा सफलता का मंत्र सोनू शर्मा ने कहा-समय को साधिए,

राष्ट्र जगत संवाददाता

बरेली। इन्वर्टिस यूनिवर्सिटी में 'परिचय 2026' ओरिएंटेशन कार्यक्रम में नवप्रवेशी विद्यार्थियों का स्वागत उत्साह और ऊर्जा के साथ हुआ। प्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर एवं उद्यमी सोनू शर्मा ने विद्यार्थियों को सफलता की राह दिखाते हुए समय प्रबंधन, सही संगति और आत्म-विकास को जीवन की प्राथमिकता बनाने का संदेश दिया। उन्होंने विद्यार्थियों को जीवन के शुरुआती पांच वर्षों को 'प्राइम टाइम' बताते हुए कहा कि इसी दौर में बनाई गई आदतें और तय की गई प्राथमिकताएं भविष्य की दिशा तय करती हैं।
कुलाधिपति डॉ. उमेश गौतम ने विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए उन्हें विश्वविद्यालय की शैक्षणिक परंपराओं, मूल्यों और उपलब्ध अवसरों का अधिकतम लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। वहीं, प्रति-कुलाधिपति पार्थ गौतम ने विद्यार्थियों को कॉलेज जीवन में अनुशासन, निरंतर सीखने और अपने कौशल को विकसित करने पर जोर देते हुए उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।
विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए सोनू शर्मा ने सफलता के लिए समय प्रबंधन, सही संगति, आत्म-विकास

रक्षाबंधन पर सेंट्रल जेल में छलका भाई-बहन का स्नेह, बहनों ने बांधी राखी और मांगी जल्द रिहाई की दुआ

राष्ट्र जगत संवाददाता

बरेली। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर भाई-बहन के अटूट प्रेम का भावनात्मक दृश्य बरेली सेंट्रल जेल में देखने को मिला। जेल में बंद कैदी भाई इस त्योहार पर अपनी बहनों के स्नेह से वंचित न रहें, इसके लिए जेल प्रशासन ने विशेष व्यवस्था की। सुबह से ही सेंट्रल जेल के बाहर सैकड़ों बहनें अपने भाइयों से मिलने के लिए पहुंचीं।
राज्य शासन के निर्देश पर जेल प्रशासन ने जेल परिसर में राखी बांधने की विशेष व्यवस्था की गई । लंबे समय बाद अपने भाइयों से मिलकर बहनों के चेहरे खुशी और भावुकता से भर उठे। बहनों ने भाइयों की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधा, तिलक लगाया और उनकी जल्द रिहाई व सुखद भविष्य की कामना की।
जेल प्रशासन ने मुलाकात के दौरान बहनों की सुविधा के लिए विशेष इंतजाम किए, ताकि वे अपने भाइयों के साथ कुछ समय बिताकर दिल की बातें कर सकें। रक्षाबंधन के अवसर पर जेल परिसर में कई भावुक पल देखने को मिले, जहां भाई-बहन के रिश्ते की मिठास सलाखों के बीच भी कायम नजर आई।

श्रद्धा पूर्वक मनाया श्रावणी उपाकर्म पर्व

राष्ट्र जगत संवाददाता

बरेली । शुक्रवार को तदनुसार सावन माह की पूर्णिमा को विगत कई वर्षों से अखिल भारतवर्षीय ब्राह्मण महासभा बरेली के तत्वाधान में मनाए जा रहे वैदिक सनातन संस्कृति के श्रेष्ठतम पर्व श्रावणी उपाकर्म का भव्य आयोजन शास्त्रोक्त विधि से पवित्र परशुराम गंगा के पावन तट पर संपन्न हुआ। भगवान परशुराम सेवा ट्रस्ट के संरक्षण,श्रीमती जय देवी संस्कृत विद्यालय रामगंगा,गुरु वशिष्ठ गुरुकुलम करगैना के विद्वान आचार्य ब्रह्मस्वरूप ,आचार्य मुनीश ,आचार्य हिमांशु के मार्गदर्शन में पूजन कार्य का शुभारंभ संकल्प के साथ, ऋषि तर्पण, विभिन्न प्रकार , जैसे भस्म स्नान,मृतिका स्नान,गौमय स्नान,पंचगव्य स्नान,धान्य स्नान,फल रस स्नान,स्वर्ण स्नान,अपामार्ग स्नान,आदि वस्तुओं से स्नान के बाद तर्पण कार्य वैदिक रीति से ऋषि तर्पण,देवता तर्पण,पूर्वजों को जलदान किया गया।
अंत में वर्ष भर उपयोग हेतु यज्ञोपवित का मंत्रोच्चारण के माध्यम से अभिमंत्रित कर यज्ञोपवित को बदलकर नए यज्ञोपवीत धारण किए गए तथा आवश्यकतानुसार यज्ञोपवित का वितरण किया गया।
कार्यक्रम में प्रमुख रूप से सुरेन्द्र पाण्डेय,मुनेंद्र देव मिश्र,रमेश तिवारी,महेश पाठक, ऋषिपाल उपाध्याय, कालीचरण मिश्रा,कथा व्यास रवि , प्रमोद उपाध्याय, दिनेश बाबू शर्मा,कृष्ण औतार गौतम, आचार्य देवेश,आचार्य जितेंद्र, आचार्य निर्दोष, आचार्य अवधेश,आचार्य नमन, आचार्य लवी नारायण,माधव,ठाकुर मुनेंद्र पाल सिंह,ठाकुर आनंद पाल सिंह,पंकज शुक्ला,राम किशोर शर्मा सहित सैकड़ों धर्मावलंबियों ने श्रद्धा पूर्वक

सिरौली के अंजनी गांव से हरिद्वार गए 24 कांवड़िए लौटे, जय मां दुर्गा ढाबे पर हुआ भव्य स्वागत

राष्ट्र जगत संवाददाता

सिरौली। बरेली जनपद के सिरौली नगर क्षेत्र के ग्राम अंजनी से 15 अगस्त को भगवान भोलेनाथ की भक्ति में 24 कांवड़ियों का जत्था हरिद्वार के लिए रवाना हुआ था। कांवड़ियों के रवाना होने के दौरान पूरे गांव में भोले बाबा के जयकारों से भक्तिमय माहौल बना रहा ।हरिद्वार से कांवड़ लेकर लौट रहे जत्थे का 23 अगस्त को जय मां दुर्गा ढाबे पर अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद, राष्ट्रीय बजरंग दल एवं हिंदू हेल्पलाइन के जिला अध्यक्ष द्वारा स्वागत किया गया। इस दौरान कांवड़ियों के लिए चाय, पकौड़ी और कोल्ड ड्रिंक की व्यवस्था की गई। कांवड़ियों ने कुछ समय ढाबे पर विश्राम करने के बाद अपनी यात्रा आगे जारी रखी ।बताया गया कि कांवड़ियों के जत्थे का रात्रि विश्राम डीआरएम स्कूल पर होगा। पूरी कांवड़ यात्रा के दौरान श्रद्धालु भगवान भोलेनाथ के जयकारे लगाते हुए आगे बढ़ रहे हैं।

कांवड़ यात्रा में प्रदीप पांडेय, प्रमोद पांडेय, रामशरण प्रजापति, पप्पू, अशोक पांडेय, भूपराम लोधी, राम सिंह, राजू पांडेय, वीरबल प्रजापति, रमेश आर्य,

लेखिका संघ के तत्वाधान में महानगर कॉलोनी के मन्कुस स्कूल में कवि गोष्ठी का आयोजन

राष्ट्र जगत संवाददाता

लेखिका संघ के तत्वाधान में महानगर कॉलोनी के मन्कुस स्कूल में कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता राजेश गौड़ ने की तथा मुख्य अतिथि रहे कवि इंद्रदेव त्रिवेदी। कवि गोष्ठी का शुभारम्भ दीप्ती पांडे नूतन द्वारा मां वाणी की वंदना से हुआ। गोष्ठी के पहले सत्र में लेखिका संघ की सदस्या कवयित्री नव्या त्यागी ' अंतरा ' की प्रथम पुस्तक ऐतबार का विमोचन मंचासीन कवियों द्वारा किया गया। सभी कवियों ने नव्या त्यागी अंतरा को बधाई दी क्योंकि लगभग 20 वर्ष की उम्र में कविता संग्रह प्रकाशित होना एक बहुत बड़ी बात है। दूसरे सत्र में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें,,

अपनी कविता पढ़ते हुए,,,राजेश गौड़ ने कहा,,,,

यह कसक जो भी आयेगी हालात की। एक कविता बनेगी सवा लाख की। जिस पर सभी ने तालियाँ बजाईं। इंद्र देव त्रिवेदी ने अपनी ग़ज़ल कुछ ऐसे पढ़ी,,,

बिना वजह उत्पात न कर.
खाली पीली बात न कर।

कमल सक्सेना ने प्रेम का सुमधुर गीत पढ़ते हुए अपनी पीड़ा इस तरह व्यक्त की,,,

वेदना ने ज़ब हृदय मंथन किया, काँपते अधरों को हमने सी लिया। फिर न बन जाये यहाँ मीरा कोई सोचकर ये विष का प्याला पी लिया। जिसे सभी ने सराहा।

संस्था की अध्यक्ष दीप्ती पांडे नूतन ने आरक्षण पर अपनी कविता पढ़ते हुए कहा कि,

आरक्षण से मुझे नहीं कोई आपत्ति.। ये नहीं है किसी के बाप की संपत्ति।

हिमांशु श्रोत्रिय निष्पक्ष ने सामयिक ग़ज़ल पढ़ते हुए कहा कि,,,, खुद से अनजान ज़माने की बात करते हैं। आसमान सर पर उठाने की बात करते हैं।

मीरा प्रियदार्शनी ने अपना कृष्ण और मीरा की भक्ति का गीत कुछ ऐसे पढ़ा,,,

मेरे मन में बस गये श्याम.
मीरा पुकारे चारों धाम।

नव्या त्यागी अंतरा ने अपनी कविता ऐसे पढ़ी,,, उसके लिये खुद को इस कदर बदल रखा है कि उसकी आँखों को हमने आईना बना रखा है।

उमा शर्मा ने अपनी कविता इस तरह से पढ़ी,,, ज़ब पाँव तुम्हारे रुक जायें। आँखों में आँसू चुभ जाएँ।

गोष्ठी के आयोजक अनुराग त्यागी ने बेटियों पर अपनी कविता पढ़ते हुए कहा कि,,आँखों का तारा हैं बेटियाँ. कुदरत की अनमोल सौगात हैं बेटियाँ। काव्य गोष्ठी का संचालन कमल सक्सेना ने किया.। गोष्ठी में उपस्थित श्रोताओं ने सभी की कविताओं को सराहा और तालियाँ बजाकर सभी का उत्साह बढ़ाते रहे। नव्या त्यागी के पिता अनुराग त्यागी ने सभी का आभार व्यक्त किया। और सभी को भोजन के लिये आमंत्रित किया।

श्री और कृष्णा ने मनाया अपना पहला रक्षाबंधन, परिवार में छाई खुशियों की लहर

राष्ट्र जगत संवाददाता

बरेली। रक्षाबंधन का पावन पर्व इस वर्ष एक परिवार के लिए बेहद खास बन गया। नन्हे श्री और कृष्णा ने अपने जीवन का पहला रक्षाबंधन बड़े उत्साह और पारिवारिक प्रेम के साथ मनाया।

इस अवसर पर कृष्णा ने अपने भाई श्री की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधा और उसकी लंबी उम्र, सुख-समृद्धि एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना की। वहीं परिवार के सदस्यों ने दोनों बच्चों को आशीर्वाद देते हुए उनके सुनहरे भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

पहले रक्षाबंधन की इस खूबसूरत याद को परिवार ने तस्वीरों में भी संजोया। घर में मिठाइयों का दौर चला और सभी ने इस खास पल का आनंद लिया। परिवार का कहना है कि यह दिन हमेशा उनके दिलों में एक मीठी याद बनकर रहेगा।

रक्षाबंधन केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि भाई-बहन के अटूट प्रेम, विश्वास और स्नेह का प्रतीक है। श्री और कृष्णा का पहला रक्षाबंधन भी इसी प्रेम और अपनत्व की खूबसूरत मिसाल बन गया।

बरेली-दातागंज मार्ग पर बड़ा सड़क हादसा टला, जमालपुर की प्रधान अनीता देवी व पुत्री प्रियंका बाल-बाल बचीं

राष्ट्र जगत संवाददाता

दातागंज। बरेली-दातागंज मार्ग पर शुक्रवार को एक बड़ा सड़क हादसा टल गया। ग्राम पंचायत जमालपुर की प्रधान अनीता देवी अपनी पुत्री प्रियंका के साथ बरेली से दातागंज लौट रही थीं। इसी दौरान सेनपुर गांव के पास (बलिया से थोड़ा आगे) अचानक सड़क पर निराश्रित गौवंश आ जाने से उनकी किया कार अनियंत्रित होकर सड़क किनारे गहरे गड्ढे में जा गिरी।

हादसा दातागंज तहसील क्षेत्र के सेनपुर गांव के निकट हुआ। दुर्घटना में कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई, लेकिन राहत की बात यह रही कि ग्राम प्रधान अनीता देवी और उनकी पुत्री प्रियंका पूरी तरह सुरक्षित हैं। दोनों को किसी प्रकार की चोट नहीं आई।

स्थानीय लोगों की मदद से दोनों को सुरक्षित बाहर निकाला गया। घटना के बाद क्षेत्र में कुछ समय के लिए अफरा-तफरी का माहौल रहा।

ईश्वर की कृपा और शुभचिंतकों के आशीर्वाद से एक बड़ा हादसा टल गया। इस घटना ने एक बार फिर सड़कों पर घूम रहे निराश्रित गौवंश से होने वाले हादसों की गंभीर समस्या को उजागर किया है।

ब्रह्मदेव महाराज स्थल पर कावड़ भक्तों को कराया भोजन

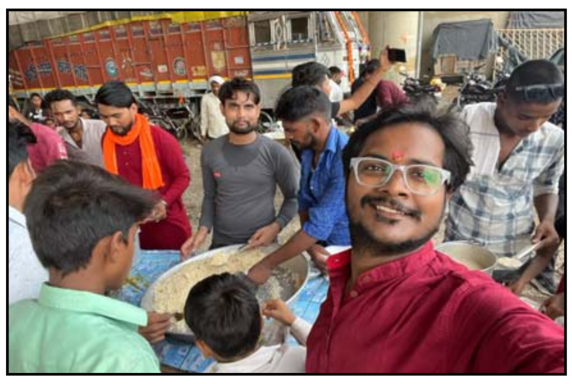

राष्ट्र जगत संवाददाता

दातागंज के पापड़ स्थित ब्रह्मदेव महाराज स्थल पर सावन के अंतिम सोमवार के अवसर पर कावड़ भक्तों के लिए भंडारे का आयोजन किया गया। ग्राम हासिमपुर निवासी नितिन, रणजीत, जयदेव, सचिन, सुधीर, राहुल, चित्रांश, शिवकुमार आदि के सहयोग से आयोजित इस भंडारे में कावड़ भक्तों को प्रसाद के रूप में भोजन कराया गया।

भंडारा सुबह करीब 11 बजे शुरू हुआ और शाम 4 बजे तक चला। भंडारे में खीर, पूड़ी, छोले और चावल प्रसाद के रूप में वितरित किए गए। कावड़ भक्तों ने श्रद्धापूर्वक प्रसाद ग्रहण किया और भंडारे का आनंद लिया।

आयोजकों ने बताया कि सावन के अंतिम सोमवार पर कावड़ भक्तों की सेवा करने के उद्देश्य से भंडारे का आयोजन किया गया। इस दौरान सहयोग करने वाले सभी लोगों ने उत्साहपूर्वक अपनी सहभागिता निभाई।

ओरिएंटेशन ने रखी अकादमिक यात्रा की मजबूत नींव

बरेली: इन्वर्टिस विश्वविद्यालय के बीबीए विभाग में नव-प्रवेशित विद्यार्थियों के लिए तीन दिवसीय ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के अकादमिक एवं सामाजिक वातावरण से परिचित कराते हुए उनमें टीम भावना, संवाद और नेतृत्व क्षमता विकसित करना रहा। यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. उमेश गौतम एवं प्रतिकुलाधिपति पार्थ गौतम के नेतृत्व में आयोजित किया गया।

टीम वर्क और रचनात्मक गतिविधियों ने बढ़ाया उत्साह

कार्यक्रम में 'परफेक्ट स्क्वायर', 'पासिंग द पार्सल', 'हूला हूप पास', 'थ्री-लेग्ड रेस', 'कॉरपोरेट क्विज', 'गेस द नेम बाई इमोजी', 'हू एम आई?' और ब्रेन टीज़र जैसी मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक गतिविधियां कराई गईं। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों की सहयोग, अवलोकन, पार्श्व चिंतन और समस्या समाधान क्षमता को विकसित किया गया। फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट डीन प्रो. मनीष गुप्ता ने उद्घाटन सत्र में छात्रों को संबोधित किया। वहीं विभागाध्यक्ष डॉ. राजीव सिंह भंडारी के पर्यवेक्षण में कार्यक्रम संपन्न हुआ। साथ ही फैकल्टी समन्वयक शिवानी त्रिपाठी तथा छात्र समन्वयकों ध्रुव वार्ष्णेय, अनाय गोयल और सुमनजीत राज ने आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ऑल इंडिया यूनाइटेड विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा में विराट विश्वकर्मा आर्मी एसोसिएशन का विलय

राष्ट्र जगत संवाददाता

फतेहपुर। विश्वकर्मा समाज की एकता और संगठनों को एक मंच पर लाने के उद्देश्य से विराट विश्वकर्मा आर्मी एसोसिएशन का ऑल इंडिया यूनाइटेड विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा में विलय हो गया। विराट विश्वकर्मा आर्मी एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष बच्चन लाल विश्वकर्मा, पुत्र श्री राम सजीवन विश्वकर्मा, निवासी कबरा, पोस्ट बरयेपुर, थाना खखरेरू, तहसील खागा, जनपद फतेहपुर ने अपने संगठन के पदाधिकारियों एवं साथियों के साथ महासभा में शामिल होने की घोषणा की।

महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक कुमार विश्वकर्मा ने बताया कि महासभा द्वारा चलाए जा रहे देशव्यापी राष्ट्रीय एकता मिशन अभियान को मजबूती और गति देने के उद्देश्य से यह महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। उन्होंने कहा कि विश्वकर्मा समाज का प्रतिनिधित्व करने वाले विभिन्न संगठनों को एकजुट कर राष्ट्रीय स्तर पर महागठबंधन तैयार करना महासभा का प्रमुख उद्देश्य है।

उन्होंने विराट विश्वकर्मा आर्मी एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष बच्चन लाल विश्वकर्मा एवं उनके सभी साथियों के महासभा में शामिल होने का स्वागत करते हुए कहा कि यह निर्णय समाज की एकता, संगठनात्मक मजबूती और अधिकारों की लड़ाई को नई दिशा प्रदान करेगा।

इस अवसर पर महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक कुमार विश्वकर्मा ने बच्चन लाल विश्वकर्मा को ऑल इंडिया यूनाइटेड विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोनीत किया। उन्होंने विश्वास जताया कि बच्चन लाल विश्वकर्मा के अनुभव और सक्रियता से महासभा के राष्ट्रीय एकता अभियान को और अधिक मजबूती मिलेगी।

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन से हिंदू देव प्रकाश शुक्ला की शिष्टाचार भेंट

राष्ट्र जगत संवाददाता

नई दिल्ली। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन से राष्ट्रीय युवा वाहिनी एवं नेशनल वालंटियर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा शंखनाद न्यूज लाइव टीवी चैनल के संपादक हिंदू देव प्रकाश शुक्ला ने शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान संगठनात्मक विषयों, युवाओं की भूमिका, जनसेवा तथा सनातन संस्कृति, गुरुकुल परंपरा, गौसेवा और संस्कार आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने पर चर्चा हुई।

शुक्ला ने बताया कि राष्ट्रीय युवा वाहिनी की ओर से 50 गुरुकुल, 57 गौशालाएं और 587 संस्कार शालाएं संचालित की जा रही हैं। संगठन ने अक्टूबर में 21 तथा नवंबर में 51 जरूरतमंद कन्याओं के विवाह कराने का संकल्प लिया है। साथ ही भारतीय ज्ञान, संस्कृति और संस्कारों को नई पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए 501 गुरुकुल स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है।

उन्होंने कहा कि युवाओं को शिक्षा और रोजगार के साथ संस्कृति, सामाजिक दायित्व और राष्ट्र निर्माण से जोड़ना आवश्यक है। भेंट के दौरान राष्ट्रहित, समाजसेवा और युवा शक्ति से जुड़े विषयों पर सकारात्मक विचार-विमर्श हुआ।

शंखा पुल के पास तंत्र-मंत्र का खेल, सोने के बुंदे लेकर ठग फुर्र

बरेली। फतेहगंज पश्चिमी क्षेत्र में शुक्रवार को हाइवे शंखा पुल के पास दिनदहाड़े एक रिश्तेदार के मौते में जा रही महिला के साथ बाइक सवार मौलाना ने तंत्र-मंत्र और झाड़-फूंक के नाम पर झांसा देकर कानों में पहने सोने के बुंदे ठग लिये। सूचना पर पहुंची पुलिस ने कई टीमों में तलाश की लेकिन वह दोनों बाइक सवार फरार हो गए ।पीड़िता की शिकायत पर पुलिस तलाश कर रही है ।जानकारी के मुताबिक थाना सिरौली के गांव कल्याणपुर निवासी अमरसी बेगम पत्नी भुरे खां अपनी ननद के साथ स्थानीय थाना के गांव केशोपुर एक रिश्तेदार बूंदन खां के निधन पर शोक जताने जा रही थीं ।सवारी से शंखा पुल पर उतरने के बाद वह केशोपुर के ओर पैदल चलने लगी। तभी पीछे से आए दो बाइक सवारों ने मदद के बहाने दोनों को अपनी-अपनी बाइक पर बैठा लिया ।ननद को बैठाकर एक बाइक तेज रफ्तार में आगे निकल गई। जबकि अमरसी बेगम को दूसरा युवक बहाने से एक विद्यालय के पास ले गया। परेशान दिख रही महिला को भाप कर उसने खुद को एक मौलाना बताकर ऊपरी हवा से निजात दिलाने के नाम पर सोने के बूँदे निकलवा लिए। ठग ने आंखों में धूल झोंकते हुए बुंदों को कागज में लपेटा, रबर बैंड लगाया और बोला- इसे पानी में घोलकर पिलाना, घुटनों का दर्द और सभी समस्या दूर हो जाएंगी ।चेतवानी दे दी कुछ देर तक कागज की पुड़िया खोलना नहीं। केशोपुर गांव के पास छोड़कर ठग भाग गया। महिला ने कागज खोला तो होश उड़ गए। अंदर सोने के बुंदों की जगह पांच-पांच के दो सिक्के थे। ठगी का एहसास होते ही महिला ने 112 पर पुलिस को सूचना दी। सूचना पर 112 और थाना पुलिस मौके पर पहुंच गई ।कई टीमें बनाकर दोनों बाइक सवार की तलाश की ।लेकिन वह फरार हो गए। सीओ हाइवे देवेश सिंह ने बताया पीड़िता की

रक्षा बंधन को 'बहन दिवस' के रूप में मनाना चाहिए : शशि प्रताप सिंह

राष्ट्र जगत संवाददाता

वाराणसी। नेशनल इक्वल पार्टी के संयोजक शशि प्रताप सिंह ने रक्षा बंधन के अवसर पर अपनी बड़ी बहन की आरती उतारकर एवं तिलक लगाकर उनका सम्मान किया। इसके बाद बहन ने भाई की कलाई पर राखी बांधकर उन्हें आशीर्वाद दिया ।इस अवसर पर शशि प्रताप सिंह ने कहा कि बहनें पूरे वर्ष अपने भाइयों की सुख-समृद्धि और मंगल की कामना करती हैं। भैया दूज पर भाई की दीर्घायु की कामना करती हैं और रक्षा बंधन पर राखी बांधने के लिए भाई के घर आती हैं। ऐसे में भाई का भी कर्तव्य है कि वह अपनी बहन का सम्मान करे और उसके प्रति प्रेम व जिम्मेदारी का भाव व्यक्त करे।

उन्होंने कहा कि बहन किसी के घर की लक्ष्मी होती है। इसलिए रक्षा बंधन केवल राखी बांधने का पर्व नहीं, बल्कि बहन के सम्मान, सुरक्षा का संकल्प और भाई-बहन के पवित्र रिश्ते को मजबूत करने का अवसर है ।शशि प्रताप सिंह ने कहा कि 'बहन से बढ़कर भाई को कोई प्यार नहीं करता। रक्षा बंधन दिखावे का पर्व नहीं, निभाने का पर्व है। इसलिए इसे केवल रक्षा बंधन के रूप में नहीं, बल्कि 'बहन दिवस' के रूप में भी मनाया जाना चाहिए। '

डीपीएस काशी ने राष्ट्रीय 'कोड बॉट चैंपियनशिप' में लहराया परचम

राष्ट्र जगत संवाददाता

वाराणसी। दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) काशी के छात्रों ने रोबोटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और कोडिंग के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित छात्र रोबोटिक्स प्रतियोगिता 'कोड बॉट चैंपियनशिप' में शानदार प्रदर्शन करते हुए विद्यालय का नाम रोशन किया।

देशभर से आए प्रतिभावान छात्रों के बीच आयोजित इस प्रतियोगिता के 'रोबोट फाइट' मुकाबले में डीपीएस काशी की टीम ने समग्र रूप से द्वितीय स्थान प्राप्त किया। विद्यालय की टीम को रनर-अप ट्रॉफी, छह स्वर्ण पदक एवं नकद पुरस्कार प्राप्त हुए।

व्यक्तिगत स्पर्धाओं में देवराज ने 'रोबोट फाइट' में प्रथम स्थान हासिल कर स्वर्ण पदक, विजेता ट्रॉफी और ?4,000 नकद पुरस्कार प्राप्त किया। वहीं साक्षी सिंह ने 'लाइन फॉलोइंग रोबोट' (रुम्रत्र) में तृतीय स्थान हासिल किया। अनमोल श्रीवास्तव ने 'रोबो रेस' और यथार्थ ने 'रोबो सॉकर' में तृतीय स्थान प्राप्त किया। सभी विजेताओं को स्वर्ण पदक एवं प्रमाणपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

छात्रों की इस उपलब्धि पर विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री मृणाल चौधुरी ने पूरी टीम एवं उनके मेंटर्स को बधाई दी। उन्होंने छात्रों की मेहनत, समर्पण और टीम भावना की सराहना करते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्तर की ऐसी प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों में तकनीकी दक्षता विकसित करने के साथ-साथ उन्हें भविष्य के तकनीकी नेतृत्व के लिए तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

धर्म, अध्यात्म और संस्कृति का त्रिवेणी संगम रक्षा बंधन

चारु सक्सेना

रक्षाबंधन का त्यौहार श्रावण मास की पूर्णिमा को नाया जाता है। यह पर्व मात्र रक्षा सूत्र के रूप में राखी ांधकर रक्षा का वचन ही नहीं देता, वरन प्रेम, समर्पण, ष्ठा व संकल्प के जरिए हृदयों को बांधने का भी वचन ता है। पहले विपित्त आने पर अपनी रक्षा के लिए थवा किसी की आयु और आरोग्य की वृद्धि के लिए कसी को भी रक्षा-सूत्र (राखी) बांधी या भेजी जाती ी। सूत्र अविच्छिन्नता का प्रतीक है, क्योंकि सूत्र धागा) बिखरे हुए मोतियों को अपने में पिरोकर एक ाला के रूप में एकाकार बनाता है। माला के सूत्र की रह रक्षा-सूत्र (राखी) भी व्यक्ति से, समाज से और पने कर्तव्यों से जोड़ता है।

रक्षाबंधन भारतीय संस्कृति का प्रमुख पर्व है। उत्तर ारत में आमतौर पर इसे भाई-बहन के स्नेह व उनके ापसी कर्तव्यों के लिए जाना जाता है। भाई द्वारा बहन ी रक्षा और इसके लिए बहन द्वारा भाई की कलाई पर क्षा-सूत्र या राखी बांधने का रिवाज ही रक्षाबंधन पर्व हा जाता है। किंतु यह प्राचीन भारतीय संस्कृति में देश ौर राष्ट्र की रक्षा, जीवों की रक्षा, समाज व परिवार की क्षा और भाषा व संस्कृति की रक्षा से भी जुड़ा हुआ है। र्तमान में रक्षाबंधन के संकल्प को पर्यावरण की रक्षा ; साथ भी जोड़कर देखा जा रहा है। कई लोग वृक्षों को खी बांधकर पर्यावरण के प्रति जागरूकता ला रहे हैं।

रक्षा का संकल्प व्यक्ति के भीतर आत्मविश्वास ाता है। रक्षा करने का भाव ही व्यक्ति को ऊर्जावान बना ता है और वह इस ऊर्जा के वशीभूत बड़े से बड़े काम र जाता है। रक्षा का संकल्प लेने वाला व्यक्ति भले ही ारीरिक रूपरेखा में कमजोर हो, लेकिन वह अंतस की र्जा से ओतप्रोत हो जाता है।

रक्षाबंधन भाई और बहन के रिश्ते की पहचान माना ाता है। राखी का धागा बांधकर बहन अपने भाई से पनी रक्षा का प्रण लेती है। यूं तो भारत में भाई-बहनों ; बीच प्रेम और कर्त्तव्य की भूमिका किसी एक दिन ी मोहताज नहीं है पर रक्षाबंधन के ऐतिहासिक और ार्मिक महत्व की वजह से ही यह दिन इतना महत्वपूर्ण ना है। आप सभी जानते हैं भारत में अगर हिंदू धर्म की ोई सबसे बड़ी पहचान है तो वह हैं इसके त्यौहार। और सर्फ हिंदू ही क्यों भारत में तो हर जाति और धर्म के यौहारों का अनूठा संगम देखने को मिलता है। हिंदू धर्म ा एक महत्वपूर्ण त्यौहार है राखी या रक्षाबंधन।

यह त्यौहार भाई-बहन के नि:स्वार्थ प्रेम का प्रतीक । भाई-बहन के पवित्र प्रेम के साथ ही इसमें जो ादगी है, वह किसी दूसरे त्यौहार में नहीं है। दीवाली में ियों की रोशनी होती है। होली में रंग और गुलाल की म मची होती है। दशहरे का दिन भी बड़ा धूमधाम का ाता है, लेकिन रक्षाबंधन का त्यौहार मनाने के लिए वित्र हार्दिक प्रेम के सिवा अन्य किसी भी चीज की रूरत नहीं पड़ती।

राखी के दिन मौसम बहुत सुहावना होता है। ाकाश में बिजली मानो अपने भाई बादलों को राखी ांधने के लिए अधीरता प्रकट करती दिखाई देती है। हां त्यौहार हर भाई को अपनी बहन के प्रति अपने र्तव्य की याद दिलाता है। बहन भाई को प्यार से राखी ांधती है और भाई मन ही मन अपनी बहन की रक्षा की जम्मेदारी स्वीकार करता है। राखी से भाई-बहन के ोच स्नेह का पवित्र बंधन और मजबूत हो जाता है।

अभी तक लोग यही मानते आये हैं कि अबला होने के नाते नारी राखी बांधकर अपनी रक्षा का भार भाई पर डालती है। किन्तु वास्तव में वह भाई को केवल अपनी रक्षा का ही नहीं, बल्कि सारी नारी जाति की रक्षा का भार सौंपती है। राखी बांधकर वह अपने भाई को शक्ति और साहस का मंत्र देती है और उसके कल्याण की कामना करती है इसलिये ऐसे पवित्र त्यौहार को उत्साह और आनंद से मनाना चाहिए।

भारत चाहे आज कितना भी विकसित क्यों ना हो जाए यहां धर्म हर चीज पर भारी पड़ता है। रक्षाबंधन के संदर्भ में भी कहा जाता है कि अगर इस पर्व का धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व नहीं होता तो शायद यह पर्व अब तक अस्तित्व में रहता ही नहीं। रक्षा बंधन पर्व का सबसे खूबसूरत पहलू यही है कि यह पर्व धर्म और जाति के बंधनों को नहीं मानता। अपने इसी गुण के कारण आज इस पर्व की सराहना पूरी दुनिया में की जाती है।

रक्षाबंधन का मंत्र

येन बद्धो बलिः राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वामपिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।

जब भी कोई कार्य शुभ समय में किया जाता है, तो उस कार्य की शुभता में वृद्धि होती है। भाई- बहन के रिश्ते को अटूट बनाने के लिये इस राखी बांधने का कार्य शुभ मुहूर्त के समय में करना चाहिए।

रक्षाबंधन के संबंध में एक अन्य पौराणिक कथा भी प्रसिद्ध है। देवों और दानवों के युद्ध में जब देवता हारने लगे, तब वे देवराज इंद्र के पास गए। देवताओं को भयभीत देखकर इंद्राणी ने उनके हाथों में रक्षासूत्र बांध दिया। इससे देवताओं का आत्मविश्वास बढ़ा और उन्होंने दानवों पर विजय प्राप्त की। तभी से राखी बांधने की प्रथा शुरू हुई। दूसरी मान्यता के अनुसार ऋषि-मुनियों के उपदेश की पूर्णाहुति इसी दिन होती थी। वे राजाओं के हाथों में रक्षासूत्र बांधते थे। इसलिए आज भी इस दिन ब्राह्मण अपने यजमानों को राखी बांधते हैं।

रक्षाबंधन का त्यौहार भाई-बहन के पवित्र प्रेम का प्रतीक है। इस दिन बहन अपने भाई को प्यार से राखी बांधती है और उसके लिए अनेक शुभकामनाएं करती है। भाई अपनी बहन को यथाशक्ति उपहार देता है। बीते हुए बचपन की झूमती हुई याद भाई-बहन की आंखों के सामने नाचने लगती है। सचमुच, रक्षाबंधन का त्यौहार हर भाई को बहन के प्रति अपने कर्तव्य की याद दिलाता है।

इस पर्व का संबंध रक्षा से है। जो भी आपकी रक्षा करने वाला है उसके प्रति आभार दर्शाने के लिए आप उसे रक्षासूत्र बांध सकते हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने रक्षा सूत्र के विषय में युधिष्ठिर से कहा था कि रक्षाबंधन का त्यौहार अपनी सेना के साथ मनाओ इससे पाण्डवों एवं उनकी सेना की रक्षा होगी। श्रीकृष्ण ने यह भी कहा था कि रक्षा सूत्र में अद्‌भुत शक्ति होती है।

धार्मिक महत्व

रक्षाबंधन कब प्रारम्भ हुआ इसके विषय में कोई निश्चित कथा नहीं है लेकिन जैसा कि भविष्य पुराण में लिखा है, उसके अनुसार सबसे पहले इन्द्र की पत्नी ने देवराज इन्द्र को देवासुर संग्राम में असुरों पर विजय पाने के लिए मंत्र से सिद्ध करके रक्षा सूत्र बांधा था। इससे सूत्र की शक्ति से देवराज युद्ध में विजयी हुए। शिशुपाल के वध के समय भगवान कृष्ण की उंगली कट गई थी तब द्रौपदी ने अपनी साड़ी का आंचल फाड़कर कृष्ण की उंगली पर बांध दिया। इस दिन सावन पूर्णिमा की तिथि थी।

एक हिंदू पौराणिक कथा के अनुसार राजा बलि ने भगवान विष्णु से अपना साम्राज्य दुश्मनों के प्रपंचों से बचाने हेतु आग्रह किया। अपने भक्त के अनुरोध पर भगवान विष्णु ने ब्राह्मण स्त्री का रूप लेकर राजा बलि के निवास में रहने का संकल्प लिया, परंतु इस प्रतिज्ञा को सुन भगवान विष्णु की पत्नी देवी लक्ष्मी ने राजा बलि से अपने स्वामी को स्वर्गलोक नहीं छोड़ने के लिए निवेदन किया। देवी लक्ष्मी ने श्रावण पूर्णिमा के दिन राजा बलि को राखी बांधकर उनसे अपने स्वामी को स्वर्गलोक नहीं त्यागने का वचन लिया। बहन की कामना जानकर राजा बलि ने विष्णु देव से स्वर्गलोक में ही रहने की विनती की। इसीलिए राखी के त्यौहार को 'बलेवा' भी कहा जाता है। इसका मतलब है, राजा बलि की भगवान विष्णु के प्रति सच्ची भक्ति।

जैन धर्म में रक्षा बंधन पर्व

यह पर्व साधना में लीन सात सौ मुनिराजों की रक्षा के साथ जुड़ा है। इसकी कथा भी वामन अवतार की तरह ही है। इसमें मुनिराज विष्णु कुमार वामन का रूप धारण कर राजा बलि से मुनियों की रक्षा करते हैं। इस कथा के अनुसार, अकंपनाचार्य का सात सौ मुनियों का संघ विहार करते हुए हस्तिनापुर पहुंचा। जिस स्थान पर मुनि साधना कर रहे थे, उसके चारों तरफ राजा बलि ने आग लगवा दी। धुएं से मुनियों के गले अवरुद्ध हो गए, आंखें सूज गईं और तेज गर्मी से उन्हें कष्ट होने लगा, लेकिन मुनियों ने धैर्य नहीं छोड़ा। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक यह कष्ट दूर नहीं होगा, तब तक अन्न-जल का त्याग करेंगे। वह श्रावण शुक्ल पूर्णिमा का ही दिन था। उस दिन मुनियों के संकट दूर करने के लिए मुनिराज विष्णु कुमार ने वामन का भेष धारण किया और बलि से भिक्षा में तीन पैर धरती मांगी। विष्णु कुमार ने अपने शरीर को बहुत अधिक बढ़ा लिया। उन्होंने अपना एक पैर सुमेरु पर्वत पर रखा, तो दूसरा पैर मानुषोत्तर पर्वत पर। तीसरा पैर रखने की जगह ही न थी। सर्वत्र हाहाकार मच गया। बलि ने जब क्षमा याचना की, तब जाकर वे पूर्ववत हुए। इस तरह सात सौ मुनियों की रक्षा हुई। सभी ने परस्पर रक्षा करने के लिए बंधन बांधा।

राखी के त्यौहार का ज्यादा महत्व पहले उत्तर भारत में था। आज यह पूरे भारत में बड़े उत्साह से मनाया जाता है। महाराष्ट्र में इसे नारली पूर्णिमा के नाम से मनाया जाता है। लोग समुद्र में वरुण राजा को नारियल दान करते हैं। नारियल की तीन आंखों को भगवान शिव की तीन आंखें मानते हैं। दक्षिण भारत में इसे अवनी अविट्टम के नाम से जाना जाता है।

रक्षाबंधन का ऐतिहासिक महत्व

कहते हैं, सिकंदर की पत्नी ने अपने पति के हिंदू शत्रु पुरु को राखी बांधकर उसे अपना भाई बनाया था और युद्ध के समय सिकंदर को न मारने का वचन लिया था। पुरु ने युद्ध के दौरान हाथ में बंधी राखी का और अपनी बहन को दिए हुए वचन का सम्मान करते हुए सिकंदर को जीवन दान दिया था।

रविंद्र नाथ टैगोर ने दिया नया नजरिया

गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर ने राखी के पर्व को एकदम नया अर्थ दे दिया। उनका मानना था कि राखी केवल भाई-बहन के संबंधों का पर्व नहीं, बल्कि यह इंसानियत का पर्व है। विश्व कवि रवींद्रनाथ जी ने इस पर्व पर बंग भंग के विरोध में जनजागरण किया था और इस पर्व को एकता और भाईचारे का प्रतीक बनाया था। 1947 के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जन जागरण के लिए भी इस पर्व का सहारा लिया गया।

इसमें कोई संदेह नहीं कि रिश्तों से ऊपर उठकर रक्षाबंधन की भावना ने हर समय और जरूरत पर अपना रूप बदला है। जब जैसी जरूरत रही वैसा अस्तित्व उसने अपना बनाया। जरूरत होने पर हिंदू स्त्री ने मुसलमान भाई की कलाई पर इसे बांधा तो सीमा पर हर स्त्री ने सैनिकों को राखी बांधकर उन्हें भाई बनाया। राखी देश की रक्षा, पर्यावरण की रक्षा, हितों की रक्षा आदि के लिए भी बांधी जाने लगी है। इस नजरिये से देखें तो एक अर्थ में यह हमारा राष्ट्रीय पर्व बन गया है।

रक्षा बंधन पर्व मनाने की विधि

रक्षा बंधन के दिन सुबह भाई-बहन स्नान करके भगवान की पूजा करते हैं। इसके बाद रोली, अक्षत, कुंमकुंम एवं दीप जलाकर थाल सजाते हैं। इस थाल में रंग-बिरंगी राखियों को रखकर उसकी पूजा करते हैं फिर बहनें भाइयों के माथे पर कुंमकुंम, रोली एवं अक्षत से तिलक करती हैं।

इसके बाद भाई की दाहिनी कलाई पर रेशम की डोरी से बनी राखी बांधती हैं और मिठाई से भाई का मुंह मीठा कराती हैं। राखी बंधवाने के बाद भाई बहन को रक्षा का आशीर्वाद एवं उपहार व धन देता है।

बहनें राखी बांधते समय भाई की लम्बी उम्र एवं सुख तथा उन्नति की कामना करती हैं। इस दिन बहनों के हाथ से राखी बंधवाने से भूत-प्रेत एवं अन्य बाधाओं से भाई की रक्षा होती है। जिन लोगों की बहनें नहीं हैं वह आज के दिन किसी को मुंहबोली बहन बनाकर राखी बंधवाएं तो शुभ फल मिलता है। इन दिनों चांदी एवं सोने की राखी का प्रचलन भी काफी बढ़ गया है। चांदी एवं सोना शुद्ध धातु माना जाता है अतः इनकी राखी बांधी जा सकती है लेकिन, इनमें रेशम का धागा लपेट लेना चाहिए।

आज बहुत जरूरत है दायित्वों से बंधी राखी का सम्मान करने की। क्योंकि राखी का रिश्ता महज कच्चे धागों की परंपरा नहीं है। लेन-देन की परंपरा में प्यार का कोई मूल्य भी नहीं है।

बल्कि जहां लेन-देन की परंपरा होती है वहां प्यार तो टिक ही नहीं सकता। कथाएं बताती हैं कि पहले खतरों के बीच फंसी बहन का साया जब भी भाई को पुकारता था, तो दुनिया की हर ताकत से लड़कर भी भाई उसे सुरक्षा देने दौड़ पड़ता था और उसकी राखी का मान रखता था। आज भातृत्व की सीमाओं को बहन फिर चुनौती दे रही है, क्योंकि उसके उम्र का हर पड़ाव असुरक्षित है। बौद्धिक प्रतिभा होते हुए भी उसे ऊंची शिक्षा से वंचित रखा जाता है, क्योंकि आखिर उसे घर ही तो संभालना है। नयी सभ्यता और नयी संस्कृति से अनजान रखा जाता है, ताकि वह भारतीय आदर्शों व सिद्धांतों से बगावत न कर बैठे। इन हालातों में उसकी योग्यता, अधिकार, चिंतन और जीवन का हर सपना कसमसाते रहते हैं।

यदि अपवादों को छोड़ दें, तो अब सामान्यतः यह स्नेह-संबंध भी पहले जैसा नहीं रहा।

क्या हो गया भाई-बहिन के इस प्रेम को? आखिर किसकी नजर लग गई इसे? सच तो यह है कि अब वैश्वीकरण का दौर है और इस दौर में आदमी मानवीय संबंधों से कटता और अपने में सिमटता जा रहा है। उस पर उपभोक्तावादी संस्कृति हावी हो रही है। पैसा अब प्रमुख हो गया है और वह संबंधों के निर्वाह पर भी अपना असर छोड़ता है। भाई-बहिन के संबंधों में भी यही बात है। दोनों की ही दृष्टि अर्थ और स्वार्थ पर गड़ी रहती है।

थोड़ी-सी सावधानी और समझदारी बरतकर दरकते-टूटते और बालू की तरह बिखरते रिश्तों को बचाया जा सकता है। उनमें पहले जैसा प्यार लाया जा सकता है। भाई-बहिन के रिश्ते ही क्यों, पिता, पुत्र, चाचा, ताऊ, मित्र, पड़ोसी आदि लोगों के साथ भी जो रिश्ते होते हैं, उन्हें भी कड़ुवाहट की जगह, मिठास में पाला जा सकता है। जरूरत है 'मैं और तुम' की जगह 'हम' की भावना पैदा करें। खुशियां बांटने से ही खुशियां मिलती हैं।

अगर जीवन में पारम्परिक संबंधों के प्रति हमारा तनाव रहित सुखद लगाव है, मन में उल्लास का, उत्साह का भाव है और फलतः जीने की चाह है, तो त्यौहार भी महज खानापूरी न होकर हमें सचमुच त्यौहार जैसे लगेंगे और अपनी सार्थकता को सिद्ध करेंगे।

हर लड़की किसी की बहन होती है और राखी का फर्ज निभाने के लिए हर लड़की की सुरक्षा करना आवश्यक है। जब समाज में हर व्यक्ति ऐसा सोचेगा तभी हर बहन सुरक्षित होगी और लड़कियों के लिए एक स्वस्थ समाज का निर्माण हो पाएगा। क्या राखी का त्यौहार मनाने मात्र से हम अपनी बहनों को सुरक्षित रख पाएंगे?

आप सभी से मेरा इस राखी पर यही अनुरोध है कि आप रक्षाबंधन मनाएं ही नहीं निभाएं भी। रक्षाबंधन की आप सभी को हार्दिक बधाइयां। **(विभूति फीचर्स)**

राखी का बंधन

नयन कुमार राठी

रिंकी बिल्ली अपने घर के आगे राखी की थाली सजाकर बैठी है। वनवासी उसके सामने से निकलकर जा रहे हैं। सभी कलाईयां राखियों से सजी है। उसे इस तरह बैठे देख सभी मुस्कुराते हुए जा रहे है। पर थाली सजाने का कारण कोई नहीं पूछ रहा है।

हर बरस रिकी इसी तरह रक्षाबंधन के दिन राखी की थाली सजाकर घर के बाहर बैठ जाती है कि किसी के पूछने पर सारी बात बतलाकर उसे राखी बांध देगी। पर हर बरस यह दिन ऐसे ही निकल जाता है। उसकी थाली सजी रह जाती है। रात में वह सजी थाली से सामान निकालकर रख देती है और राखी को संभालकर रख लेती है। उसके पास राखियों का ढेर हो गया है। वह हर रक्षा बंधन के दिन राखियों को फैंकने की और थाली नहीं सजाने की सोचती है। पर मन गवाही नहीं देता और वह थाली सजा लेती है।

दोपहर होने तक किसी के द्वारा नहीं पूछे जाने पर वह थाली उठाकर अंदर आई। उसे एक ओर रखकर उदास सी पलंग पर पड़ गई। बार-बार उसकी नजर थाली पर जाती। मन में वह बोली पता नहीं भगवान ने किस जनम के पापों का बदला लिया है।

सगा भाई नहीं है। दूर-दूर तक रिश्तेदारी में भी कोई भाई नहीं है। धरमभाई कोई बनने को राजी नहीं होता। शायद हमारे पूर्वजों की करतूतों का ख्याल करके कोई हमसे रिश्ता नहीं जोड़ना चाहता हो। शाम तक और देखती हूं। नहीं तो बाजार जाकर अपने जातिभाई की तस्वीर खरीदकर उसे ही राखी बांध दूंगी। जाने कब उसकी आंख लग गई।

खट-खट की आवाज से उसकी आंख खुली। आंख मसलते हुए वह उठी। दरवाजे के पास पहुंचकर उसे खोला। सामने वन के चिंकी बंदर को देखकर वह आश्चर्य से बोली तुम यहां कैसे? शायद गलत जगह आ गए हो।

वह दरवाजा बंद करके जाने लगी। बंदर हंसते हुए बोला-मैं सही जगह आया हूं। अगर अंदर ले चलो तो सारी बात बतलाऊं। रिंकी उसे लेकर अंदर आ गई। पलंग पर बैठाया। वह पानी लेकर आई। पानी पीने के पश्चात् चिंकी बोला एक बात कहना चाहता हूं जो बहुत दिनों से मन में है। तुमसे मिलकर कहने की सोच रहा था पर हिम्मत ही नहीं हुई कि कहीं मेरी बात सुनकर तुम मुझे गालियां नहीं देने लगो। पर आज हिम्मत करके तुमसे कहने आया हूं। आज रक्षाबंधन है। अगर तुम्हें कोई ऐतराज नहीं हो, मुझे अपना भाई बनाकर राखी बांध सकती हो। यह कहते हुए चिंकी की आंखें भर आई।

हिचकियां लेते हुए रिंकी बोली यह बात किसी से भी सुनने को बरसों से मेरे कान तरस रहे हैं। आज मेरे मन की आस पूरी होगी। वह दौड़कर अंदर गई। राखी की सजी थाली लेकर आई, चौकी लगाई, चिंकी को उस पर बैठने को कहा। उसके बैठने पर उसने चिंकी को तिलक लगाया, राखी बांधी और जो राखियां थाली में थी वे भी बांधने लगी। चिंकी बोला यह क्या, रिंकी हंसते हुए बोली भैया। बरसों की आस आज पूरी होगी। ये राखियां हर बरस मैं सहेज कर रख लेती थी अब इन्हें सहेजकर नहीं रखना होगा। हर बरस नई थाली और नई राखी सजेगी। इसलिए सभी राखियां तुम्हें बांध रही हूं। उसने सभी राखियां चिंकी को बांध दी। फिर मिठाई खिलाकर आरती उतारी।

चिंकी ने अपनी जेब में हाथ डालकर रुपये निकाले और थाली में रखकर बोला इन रुपयों से अपनी मनपसंद की वस्तु खरीद लाना। उसने रिंकी के चरण छुए। वह हंसकर बोली भैया। आज बहन के घर भोजन करके ही जाना। वह हंसकर बोला बहन का कहना कैसे टाल सकता हूं।

रिंकी भोजन बनाने में लग गई। भोजन बनाने के पश्चात वह थाली सजाकर लाई। दोनों ने साथ में भोजन किया। भोजन के पश्चात रिंकी हंसते हुए बोली ऐसा रक्षाबंधन बार-बार आए। भाई-बहन के घर राखी बंधवाने आए। चिंकी हंसते हुए बोला-बहना अब तो इस भाई को हमेशा ही तुम्हारे घर आना है और रक्षाबंधन के दिन तो विशेष रूप से आना है। **(विभूति फीचर्स)**

पावन रिश्तों का पर्व है रक्षाबंधन

घनश्याम 'बादल'

पर्व, त्यौहार भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है। समय चक्र के साथ वर्ष पर्यंत यहां त्यौहारों की धूम रहती है। बसंत ऋतु के पश्चात भीषण गर्मी से जैसे ही वर्षा की फुहारें राहत दिलाती हैं। एक बार फिर त्यौहारों की धमक शुरू हो जाती है। श्रावण की तीज के झूलों से उतरी नव युवतियों को अपने भाइयों की याद के आते ही मानों रक्षाबंधन आ जाता है।

भाई-बहन के रिश्तों की पवित्रता, बहन-भाई के सम्बन्ध का दायित्व बोध तथा सामाजिक मान्यता सभी को रक्षाबंधन रेखांकित करता है।

भारत के इतिहास में रक्षाबंधन का उल्लेख विशेषकर राजपूत भाइयों द्वारा अपनी बहन की अस्मिता की रक्षा में प्राण तक उत्सर्ग कर देने के उदाहरणों से तो भरा पड़ा है। हुमायुं जैसे मुसलमान शासक द्वारा भी कर्णावती की राखी की लाज रखने के लिए अपने जाति भाई शासक से लोहा लेने की प्रेरणा गाथाओं से भी यह पर्व ओत-प्रोत है।

रक्षाबंधन के त्यौहार पर बहनें, भाई की कलाई में पहले केवल एक सूत का धागा ही बांधा करती थीं और बदले में भाई उन्हें उनकी रक्षा का न केवल वचन ही देते थे अपितु प्राण से निबाहते भी थे। समय के साथ सम्पन्न परिवारों में धागे का स्थान सोने-चांदी के काम वाली राखियों ने ले लिया तो मध्यम परिवारों में अपेक्षाकृत कम कीमत की मगर भावों में अमूल्य राखियां आ गई। भाई भी रक्षा के वचन के साथ उपहार देने लगे।

तत्कालीन समाज में बहन-बेटियां प्रायः निरापद एवं सुरक्षित ही थीं परन्तु विदेशी आक्रमणों के समय आक्रांताओं द्वारा मर्यादा हनन आदि के भय के समय भाइयों के वचन की परीक्षा होती थी। सामंती युग में प्रायः मध्यम वर्ग की सुंदर स्त्रियों की रक्षा के प्रति

भाईयों को सदैव ही सजग रहना पड़ता था। मुगलकाल में अकबर के बाद के शासकों का हिन्दू विरोधी रवैया भी एक डर पैदा करता रहा परन्तु अंग्रेजी शासन में क्रांतिकारियों का मनोबल तोड़ने के लिए छोटे अधिकारी भी ऐसा दुष्कृत्य करते थे।

स्वतंत्रता के पश्चात के समाज में अब पतन का चरमोत्कर्ष देखने को मिलता है। समाचार-पत्रों में भाई-बहन के पवित्र रिश्ते की आड़ में अनैतिक सम्बन्धों के समाचार तो बहुत ही आम होकर रह गए हैं। आधुनिक रंग में रंगे युवक-युवती प्रायः मां-बाप एवं समाज की नजरों में धूल झोंकने के लिए राखी बांधने एवं बंधवाने को मौज-मस्ती को छिपाने की ढाल के रूप में इस्तेमाल करने से नहीं हिचकते। यद्यपि मध्यम वर्ग में रिश्ते की यह पवित्रता अभी भी अक्षुण्ण न सही पर पर्याप्त कायम है।

वास्तव में भारतीय मनीषियों ने समय की चाल को बहुत समय पहले ही भांप लिया था, तभी तो उन्होंने रक्षाबंधन जैसे त्यौहारों के माध्यम से रिश्तों की पवित्रता को बनाए एवं बचाए रखने का आयोजन किया था।

रक्षाबंधन महज कलाई पर एक धागा बांधने की रस्म नहीं अपितु भाई-बहन के प्यार का अटूट बंधन है। यह पर्व रिश्तों की पवित्रता एवं वचनबद्धता का प्रतीक है और हमें भारतीय संस्कृति की पवित्रता और उदात्ता का स्मरण करवाता है। रक्षा का यह बंधन भाई स्वयं बंधवाता है, उसे स्वीकार करता है तो उसे निभाने का दायित्व भी उसे ही पूरा करना है।

भारतीय संस्कृति विविध एवं विराट है। यहां हर पराई स्त्री में माता एवं बहन के दर्शन किए जाते हैं। केवल रक्त सम्बन्ध ही नहीं, भाव बंधन की मुंह बोली बहनें भी यहां मुंह बोले भाईयों से रक्षा का वचन पाती रही हैं। कामुकता को हमारी संस्कृति में कभी और कहीं सम्मान नहीं मिला है। आज फिर हमें रक्षा के बंधन के प्रति उपहार में वस्तुएं नहीं अपितु बहनों को संरक्षण देना है तो आइए मनाएं भाई-बहन के स्नेह बंधन का यह पर्व। **(विभूति फीचर्स)**

रणबीर कपूर की फिल्म ब्रह्मास्त्र 2 पर आई बड़ी अपडेट; इस रोल में नजर आ सकती हैं दीपिका

रणबीर कपूर इस साल दिवाली पर अपनी बड़ी फिल्म 'रामायण' की रिलीज की तैयारी कर रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक 'ब्रह्मास्त्र 2' के लिए वह अयान मुखर्जी के साथ फिर से काम कर सकते हैं। मेकर्स फिल्म की स्क्रिप्ट पर चर्चा कर रहे हैं। इस बहुप्रतीक्षित सीक्वल का प्री-प्रोडक्शन चल रहा है। खबर है कि रणबीर के अगले साल जनवरी तक 'रामायण: पार्ट 2' की शूटिंग पूरी करने की उम्मीद है। कुछ समय के ब्रेक के बाद अभिनेता 'ब्रह्मास्त्र 2' पर काम शुरू कर सकते हैं। इसमें आलिया भट्ट लीड रोल में होंगी, जो अभिनेता की पत्नी हैं।

क्या होगा दीपिका का रोल?

जहां रणबीर और आलिया शिव और ईशा के अपने किरदारों को दोहराने के लिए तैयार हैं, वहीं एक्ट्रेस दीपिका पादुकोण भी अमृता का किरदार निभाने के लिए फिल्म से जुड़ सकती हैं। फैंस 'ब्रह्मास्त्र' में शिव की मां के तौर पर दीपिका की झलक देखकर बहुत खुश हुए थे। इससे फिल्म में उनके किरदार और सीक्वल में उनकी भूमिका के बारे में उत्सुकता पैदा हुई।

कैसे कलाकार चाहते हैं अयान?

खबर यह भी है कि अयान और उनकी क्रिएटिव टीम दीपिका को कास्ट करना चाहती है, क्योंकि उन्हें लगता है कि अमृता के किरदार के लिए एक ऐसी एक्ट्रेस की जरूरत है. जो स्क्रीन पर जबरदस्त प्रभाव और मौजूदगी ला सके। हालांकि, अभी भी बातचीत चल रही है।
कितने किरदार निभाएंगे रणबीर?
'ब्रह्मास्त्र 2' को लेकर सबसे बड़ी चर्चा का विषय रणबीर का डबल रोल हो सकता है। बताया जा रहा है कि एक्टर शिव और देव दोनों का किरदार निभाएंगे और पहली फिल्म में दिखाए गए टकराव और पौराणिक कथा को आगे बढ़ाएंगे।

क्यों उत्साहित हैं रणबीर?

मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, रणबीर इस फ्रेंचाईजी में वापसी करने और चुनौतीपूर्ण डबल रोल निभाने को लेकर उत्साहित हैं। उनके शिव और देव दोनों का किरदार निभाने से सीक्वल को एक बड़ा कैनवस मिल सकता है। कहानी दोनों मुख्य किरदारों के बीच के रिश्ते और टकराव को गहराई से दिखा सकती है।

क्या रिया को याद आया जिंदगी का सबसे कठिन दौर

'द ट्रेटर्स 2' में किसी पर शक होना खेल का हिस्सा है, मगर रिया चक्रवर्ती के लिए 'ट्रेटर' शब्द शायद बाकी खिलाड़ियों जितना हल्का नहीं है। घर में जब उन पर शक बढ़ता है, तो रिया अपनी जिंदगी के उस दौर को याद करती हैं, जब उन्हें लगता था कि दुनिया ने पहले ही उन्हें ट्रेटर मान लिया था। उनकी सफाई में खेल से ज्यादा उनकी अपनी कहानी सामने आ जाती है।

मैं इनोसेंट निकली घर में अपने ऊपर हो रहे शक के बीच रिया कहती हैं, 'मैं सच में ट्रेटर नहीं हूं। मैं कैसे बताऊं? मेरा जो नैरेटिव है ना लाइफ का, यही रहा कि दुनिया ने मुझे ट्रेटर समझा लेकिन मैं इनोसेंट निकली हूं।' रिया का इशारा उस दौर की तरफ है, जब सुशांत सिंह राजपूत की मौत के बाद उन्हें लंबे समय तक सवालों और आलोचनाओं का सामना करना पड़ा था। 2025 में सीबीआई ने मामले में क्लोजर रिपोर्ट दाखिल की थी। जांच में रिया के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने का सबूत नहीं मिला था।

क्या है रिया की सफाई?

शो में खेल का एक अहम हिस्सा हत्या का है। ट्रेटर्स को चुपचाप किसी खिलाड़ी को खेल से बाहर करने का मौका मिलता है। जबकि बाकी खिलाड़ी यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि आखिर ट्रेटर कौन है। ऐसे में जब रिया पर भी ट्रेटर होने का शक बढ़ता है, तो वह अपनी पुरानी छवि का हवाला देते हुए कहती हैं, 'मैं तो पहले से ही दुनिया को ट्रेटर दिखती हूं, समझ रहे हो? मेरी निजी जिंदगी की वजह से। तो मैं जानबूझकर एक शो में आकर मर्डर-वर्डर थोड़ी करूंगी। ये मेरे लिए बहुत खराब होगा। इसके मीम्स बनेंगे। मैं देश की सबसे ज्यादा ट्रोल होने वाली इंसान हूं, इसका मतलब समझते हो आप?' रिया को लगता है कि अगर उन्होंने खेल में जानबूझकर किसी को धोखा दिया तो लोग इसे सिर्फ खेल की चाल नहीं मानेंगे। उनके लिए यह उनकी पुरानी छवि से भी जुड़ जाएगा।

रिया ने करण से क्या कहा?

दरअसल, शो के पहले के एक एपिसोड में करण जौहर ने रिया से पूछा था कि वह ट्रेटर बनकर खेलना चाहेंगी या इनोसेंट बनकर। रिया ने साफ कहा था कि वह इनोसेंट बनना चाहती हैं। उन्होंने कहा था, 'एक्चुअली मुझे इसी साल क्लीन चिट मिली है। इसी साल ही लोगों को पता चला है कि मैं इनोसेंट हूं। बहुत देर तक शक में रही हूं, तो वो इतना पसंद नहीं है अब मुझे।'

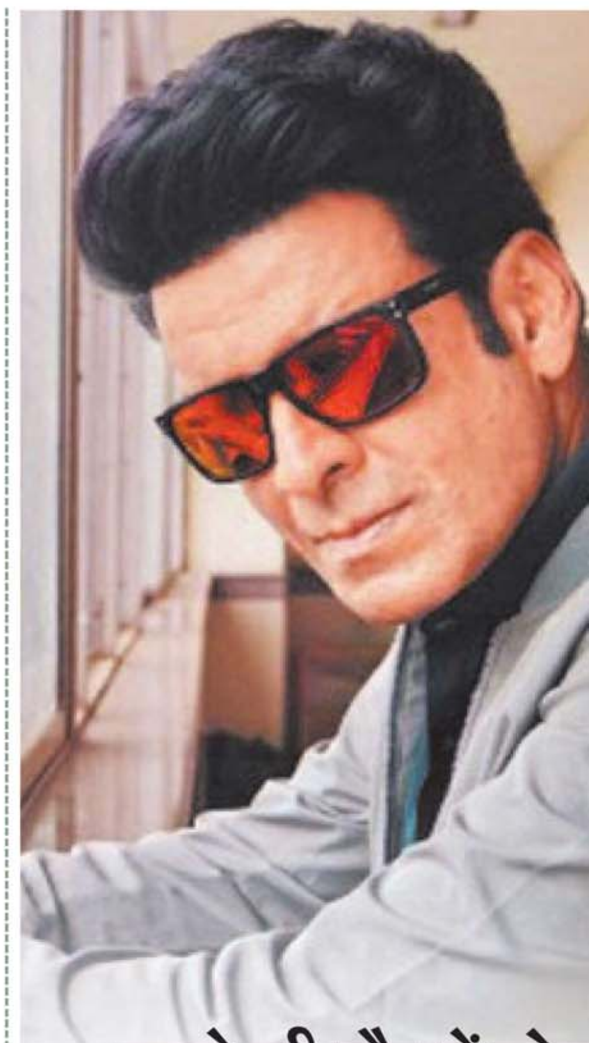

सपने की दौड़ में छोड़ माता-पिता का साथ, अब भी अपराध-बोध और गहरा पछतावा होता है

नेशनल अवॉर्ड जीतने वाले एक्टर मनोज बाजपेयी ने एक बार उस भारी अपराध-बोध के बारे में बात की थी, जिसे उन्होंने अपनी जिंदगी के एक बड़े हिस्से में महसूस किया था। फिल्ममेकर महेश भट्ट के साथ उनकी बातचीत का एक पुराना क्लिप इंटरनेट पर फिर से सामने आया है, जिसमें वह अपने माता-पिता का साथ छोड़ने के पछतावे के बारे में बात करते हुए दिख रहे हैं। उन्होंने वीडियो में कहा, 'मैंने सबसे बड़ी चीज जो छोड़ी, और आप इससे बहुत जुड़ाव महसूस करेंगे, वह थी अपने माता-पिता का साथ, खासकर अपनी मां का साथ। इन पूरे 20 सालों में

मैंने उनके साथ कभी भी 1
दिन से ज्यादा समय न
बिताया। मेरे मन में अब भ
एक अजीब तरह का पछताव
है कि अपने सपने को पू
करने की दौड़ में मैंने अप
माता-पिता का साथ छो
दिया। जब मैंने अपने माता
पिता को स्क्रीन अवॉर्ड के लि
बुलाया, जो मेरा पहला अवॉ
था, तो वे दो दिन के लिए आ
थे। बातचीत के दौरान उन्हों
बताया, 'बेटा, एक बात या
रखना, जो सफल नहीं हुअ
वह बेवकूफ नहीं होता।' य
बात सिर्फ एक मां ही क
सकती है।
उन्होंने आगे कहा, 'एक बा
मैं दो दिन बिताने दिल्ली गय
था। सुबह नहाने के बाद बा
बनाते हुए मैंने पूछा, 'मां,
कैसा लग रहा हूं? अच्छा ल
रहा हूं न?' उन्होंने कह
'बेटा, शोहरत और पैर
मिलने पर तो गधा भी सुंद
लगने लगता है।'' मनो
बाजपेयी का अपनी मां गीत
देवी के साथ बहुत करीब
रिश्ता था। वह एक गृहिणी थ
और उनके जीवन भर उनक
हिम्मत का एक अहम स्रो
रहीं। एक्टर ने अक्सर एक्ट
बनने के अपने मुश्किल सफ
के दौरान अपने माता-पिता
त्याग और उनके सहयोग
बारे में बात की है। गीता देव
का निधन 8 दिसंबर, 202
को 80 साल की उम्र में हुआ
वह लगभग 20 दिनों से बीमा
थीं, और दिल्ली के ए
अस्पताल में उनका इलाज च
रहा था। उनके निधन
लगभग एक साल पहल
2021 में, एक्टर ने अप
पिता को खो दिया था

क्या भाग्यश्री बोर्से के हाथ से फिसली आदित्य रॉय कपूर की फिल्म?

साउथ की चर्चित अभिनेत्री भाग्यश्री बोर्से और बॉलीवुड अभिनेता आदित्य रॉय कपूर, डायरेक्टर मिलाप जवेरी की आगामी फिल्म का हिस्सा होंगे। फिल्मफेयर की एक रिपोर्ट पर आधारित यह खबर पिछले दिनों खूब चर्चा में रही। लेकिन अब नया अपडेट इस बारे में सामने आया है। इस फिल्म को लेकर टी-सीरीज प्रोड्यूस कर रहा है। टी-सीरीज के एक प्रवक्ता ने कहा, 'आदित्य रॉय कपूर के साथ टी-सीरीज और मिलाप जवेरी एक फिल्म बना रहे हैं। इस प्रोजेक्ट में भाग्यश्री बोर्से के शामिल होने की खबरें गलत हैं। प्रोडक्शन हाउस जल्द ही अभिनेत्री के नाम का आधिकारिक घोषणा करेगा।'
भाग्यश्री बोर्से तेलुगु, तमिल और हिंदी फिल्मों में अभिनय करती हैं। वह बॉलीवुड में 'यारियां 2' और 'चंदू चैंपियन' में छोटे लेकिन अहम किरदार निभा चुकी हैं। वहीं फिल्म विजय देवरकोंडा की फिल्म 'किंगडम' का भी वह हिस्सा रही हैं। वह एक तमिल फिल्म 'सियोन' भी कर रही हैं।

कार्तिक आर्यन ने लॉन्च किया डोपामिन स्टूडियोज़

कार्तिक आर्यन ने अभिनय से आगे बढ़ते हुए अपने प्रोडक्शन बैनर डोपामिन स्टूडियोज़ की शुरुआत की है। यह बैनर अब मशहूर फिल्म निर्देशक कबीर खान के साथ उनकी आगामी फिल्म से आधिकारिक रूप से जुड़ गया है। यह अभी तक बिना शीर्षक वाली फिल्म कार्तिक और कबीर खान की 2024 की बायोग्राफिकल स्पोर्ट्स ड्रामा 'चंदू चैंपियन' के बाद दूसरी साझेदारी है।

गौरतलब है कि 'चंदू चैंपियन' भारत के पहले पैरालंपिक स्वर्ण पदक विजेता मुरलीकांत पेटकर के जीवन पर आधारित थी, जिसके लिए कार्तिक को हाल ही में भारत के 72वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का सम्मान मिला है। असाधारण सच्ची घटना से प्रेरित इस फिल्म में कार्तिक एक किकबॉक्सिंग कोच की भूमिका निभा रहे हैं, जो कश्मीर की एक युवा लड़की के सफर को दिशा देने में मदद करता है।
माना जा रहा है कि इस फिल्म की कहानी युवा कश्मीरी एथलीट तजामुल इस्लाम के जीवन से प्रेरित है, जिन्होंने किकबॉक्सिंग चैंपियन के रूप में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई। कहानी सुनने के बाद से ही कार्तिक इससे इस कदर गहराई से जुड़ गए कि इसकी भावनात्मकता, संघर्ष, दृढ़ता और जज्बे से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाए। इसी जुड़ाव के चलते उन्होंने फिल्म में अभिनय करने के साथ ही डोपामिन स्टूडियोज़ के माध्यम से निर्माता के रूप में भी जुड़ने का फैसला कर लिया। इस संदर्भ में फिल्म से जुड़े एक सूत्र ने बताया, 'कहानी सुनते ही कार्तिक इससे बहुत गहरे स्तर पर जुड़ गए थे। वास्तविक जीवन की इस कहानी में मौजूद साहस, जुनून और दृढ़ विश्वास ने उन्हें काफी प्रभावित किया। उन्हें लगा कि यह ऐसी कहानी है, जिसे ज्यादा से ज्यादा दर्शकों तक पहुंचना चाहिए। निर्माता के रूप में जुड़ने का उनका फैसला इसी विश्वास और फिल्म को रचनात्मक स्तर पर और गहराई से समर्थन देने की इच्छा से आया।'
डोपामिन स्टूडियोज़ की शुरुआत कार्तिक आर्यन के करियर में एक नए अध्याय की शुरुआत है, जहां वह अभिनय के साथ-साथ फिल्म निर्माण में भी अपनी रचनात्मक भागीदारी बढ़ा रहे हैं। कबीर खान के साथ उनकी यह दूसरी फिल्म भी संघर्ष, महत्वाकांक्षा, दृढ़ संकल्प और मानवीय जज्बे की जीत जैसी भावनाओं पर केंद्रित है। दिलचस्प बात यह है कि इस भूमिका के लिए कार्तिक ने किस बॉक्सिंग की ट्रेनिंग भी ली है। फिल्म की शूटिंग फिलहाल जारी है और इसके कुछ हिस्सों की शूटिंग मुंबई और कश्मीर में की जा रही है। इसके अलावा फिल्म का शीर्षक, बाकी कलाकारों और रिलीज़ डेट से जुड़ी अन्य जानकारियां आने वाले समय में आधिकारिक रूप से सामने आने की उम्मीद है।

रुबीना दिलैक ने याद किया 'खतरों के खिलाड़ी' का सफर, बोलीं- हर दिन लगता था कि अब आगे क्या होगा?

टीवी की दुनिया में रुबीना दिलैक अपनी दमदार एक्टिंग के साथ-साथ अपने बेबाक अंदाज के लिए भी जानी जाती हैं। छोटे पर्दे पर डांस से लेकर खतरनाक स्टंट तक, उन्होंने हर जगह अपनी क्षमता दिखाई है। इस कड़ी में उन्होंने बुधवार को अपने पुराने स्टंट रियलिटी शो 'खतरों के खिलाड़ी' से जुड़ी यादों को सोशल मीडिया पर साझा किया है। रुबीना ने शो के दौरान की कई तस्वीरें और वीडियो एक साथ शेयर किए। इनमें उनके स्टंट, दोस्तों के साथ बिताए पल और शो के दौरान उनका अलग अंदाज देखने को मिला। रुबीना ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर की, जिसमें तस्वीरें और कुछ छोटे-छोटे क्लिप्स शामिल हैं। इस वीडियो में वह अलग-अलग अंदाज में नजर आ रही हैं। कुछ तस्वीरों में वह ओरी और जैस्मिन भसीन के साथ मस्ती करती दिखाई दे रही हैं। वहीं कुछ वीडियो में वह शो के मुश्किल स्टंट करती नजर आती हैं। पोस्ट में उनका फैशन स्टाइल भी देखने को मिल रहा है। इन तस्वीरों के साथ रुबीना ने लिखा, ''हर दिन इस सवाल के साथ भरा होता था कि अब आगे क्या होगा, लेकिन हमारे दिल हंसी, खुशी के आंसुओं और डर से भरे रहते थे।'' 'खतरों के खिलाड़ी' ऐसा रियलिटी शो है, जिसमें मनोरंजन की दुनिया से जुड़े सितारे अपने डर का सामना करते हैं। शो में कंटेस्टेंट्स को ऐसे स्टंट दिए जाते हैं, जिनमें कई बार ऊंचाई, पानी, रफ्तार और अलग-अलग तरह की मुश्किल परिस्थितियां शामिल होती हैं। हर स्टंट के दौरान कलाकारों को अपने डर पर काबू पाना पड़ता है। यही वजह है कि शो में सिर्फ शारीरिक ताकत ही नहीं, बल्कि हिम्मत और दिमाग का इस्तेमाल भी जरूरी होता है।
भारत में इस शो की शुरुआत 'फियर फैक्टर इंडिया' के नाम से हुई थी। बाद में इसे 'फियर फैक्टर: खतरों के खिलाड़ी' नाम मिला। शो का पहला सीजन 21 जुलाई 2008 को आया था। साल 2020 में इसका स्पिन-ऑफ 'खतरों के खिलाड़ी: मेड इन इंडिया' भी शुरू किया गया था। शो के पिछले सीजन यानी 'खतरों के खिलाड़ी 14' की शूटिंग रोमानिया में हुई थी। इस सीजन के विजेता करणवीर मेहरा रहे थे, जबकि कृष्णा श्रॉफ रनर-अप बनी थीं। रुबीना दिलैक के करियर की बात करें तो उन्होंने टीवी पर अपनी शुरुआत 'छोटी बहू' से की थी। इस शो में उनके किरदार को काफी पसंद किया गया और वह जल्द ही घर-घर में पहचानी जाने लगीं। इसके बाद उन्होंने 'सास बिना ससुराल', 'पुनर्विवाह- एक नई उम्मीद', 'देवों के देव...महादेव', 'जीनी और जूजू' और 'शक्ति- अस्तित्व के एहसास की' जैसे कई शोज में काम किया। 'शक्ति' में रुबीना के किरदार को खास

लोकप्रियता मिली। इसके बाद उन्होंने रियलिटी
शोज की दुनिया में भी अपनी जगह बनाई। व
'बिग बॉस 14' की विजेता रह चुकी हैं। इसके
अलावा उन्होंने 'फियर फैक्टर: खतरों के खिलाड़
12' और 'झलक दिखला जा 10' में भी हिस्स
लिया। रुबीना ने फिल्मों में भी कदम रखा। साल
2022 में उन्होंने राजपाल यादव और हिते
तेजवानी के साथ फिल्म 'अर्ध' से अपना फिल्म
सफर शुरू किया। इसके अलावा वह होस्ट के तौ
पर भी नजर आईं। उन्होंने 'द वार्ड' को होस्ट
किया, जिसमें 10 गर्भवती महिलाओं के मां बन
के सफर को दिखाया गया

स्वामी , प्रकाशक , मुद्रक सौरभ शर्मा द्वारा हिंद प्रिंटिंग प्रेस लाला मार्केट के सामने बाबा भैरवनाथ मंदिर के सामने बरेली उत्तर प्रदेश 243001 से मुद्रित एवं कुसुम नगर ग्रीन पार्क बरेली से प्रकाशित ।
प्रधान संपादक सौरभ शर्मा RNI NO. : UPHIN/2024/90933 इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों , लेखों का चयन एवं संपादन पीआरबी अधिनियम - 1868 की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायीं । न्यायिक क्षेत्र केवल बरेली मान्य होगा ।

RJYS
SOLAR SYSTEM
RJYS
SOLAR SYSTEM
(A Unit of RJYS Group)
20+
YEARS OF
TRUST &
EXPERIENCE
आज ही अपने
घर में सोलर प्लांट
लगवाएँ!
पूरे उत्तर प्रदेश में
इंस्टॉलेशन सुविधा उपलब्ध
सरकारी सब्सिडी
का पूरा लाभ उठाएं
कीमत शुरू मात्र
₹60,000
प्रति किलोवॉट से
20 वर्षों का भरोसेमंद
इलेक्ट्रिकल अनुभव
उच्च गुणवत्ता वाली
इंस्टॉलेशन एवं सर्विस
एड. सौरभ शर्मा
M.Sc., B.Ed, LLB
Contact Now:
RJYS GROUP
7017533033
RJYS
SOLAR SYSTEM
UPNEDA Registered
Govt. Approved Vendor
ISO
ISO 9001:2015
Certified Company
स्वच्छ ऊर्जा अपनाएं, उज्जवल भविष्य बनाएं!